ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

पौष २०८१ जनवरी २०२५

₹ ३०

कविता - सुभाषचंद्र बसु जयंती २३ जनवरी

वीर सुभाष

- डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

अँग्रेज काँपते थे जिनसे, वे वीर सुभाष निराले थे।
अपने भीषण रण गर्जन से, जो आफत के परकाले थे।।

वे क्रान्ति मार्ग के अग्रदूत,
उनसे दुश्मन थर्राता था।
वे स्वाभिमान की श्रेष्ठ मूर्ति,
उनका साहस से नाता था।।

वे बाढ़, अकाल, महामारी- में जनता की सेवा करते।
वे दीन दुखी, पीड़ित वंचित- की हर बाधा को थे हरते।।

वे वेश बदलकर चुपके से,
काबुल हो जर्मन को पहुँचे।
हिटलर से मिले देश के हित-
निर्णायक अवसर पर पहुँचे।।

आजाद हिन्द सेना सँवार- वे टूट पड़े अँग्रेजों पर।
नारा दे दिया चलो दिल्ली, फहरा दो झंडा सब मिलकर।।

तुम मुझे खून दो, मैं तुमको
आजादी बदले में दूँगा।
मैं सबको भारत माता की-
सेवा का भी अवसर दूँगा।।

वे कहते थे-हम सब न रहें, भारत आजादी पाएगा।
हिन्दी होगी स्वराष्ट्र भाषा, जन-जन उसको अपनाएगा।।

- हरदोई (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

पौष	२०८१	वर्ष	४५
जनवरी	२०२५	अंक	०७

संरक्षक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

आप सभी जानते हैं न दो गीतों का हमारे स्वतंत्र राष्ट्र के जीवन में सर्वाधिक महत्व है एक **राष्ट्रगान 'जन गण मन'** का और दूसरे **राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्'** का। दो भिन्न रचनाकारों क्रमश: गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर और राष्ट्रऋषि बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने इनकी रचना की है। पूरे–पूरे गीतों की व्याख्याएँ फिर कभी समझेंगे पर इनके मुखड़ों को ही यदि विचार करें दो भिन्न गीत एक–दूसरे से सम्बद्ध एक ही ध्येय 'राष्ट्रीयता' के साथ परस्पर पूरक सन्देश देते हैं।

'जन गण मन' अर्थात् भारत के उन लोगों का 'मन' जो गणतंत्रीय व्यवस्था स्वयं स्वीकार कर एक इकाई 'गण' बन चुके हैं। सरल शब्द में **'हम सब भारतीय'**। यह हुआ 'कर्त्ता' और उनका 'कर्म' क्या हो? वह है 'मातरम्' माँ यानि भारतमाता और क्रिया पद 'वन्दे' वन्दना करना। 'जन गण मन' और 'वन्देमातरम्' का संयुक्त भाव हुआ **'हम भारत के लोग एक मन से भारतमाता की वंदना करते हैं।'** यह एक शपथ है, संकल्प है, साधना है और यही हमारी शक्ति भी है।

'जन' यानि लोग, 'गण' यानि सामूहिक रूप में संगठित रूप में, 'मन' से जब भारत माता की वंदना करें तो यही राष्ट्रीयता है।

अब भारतमाता की वंदना का अर्थ उसके नदी, पर्वत, वन, मरुस्थल, सागरों का या बहुरंगी संस्कृति का या उसके प्राचीन गौरवशाली इतिहास का वर्णन दुहराना मात्र ही नहीं है बल्कि इसकी प्रकृति की रक्षा, संस्कृति की परंपरा को बढ़ाना और वे सारे काम करना जिससे भारत माता 'वंदनीय' बनी रहे, केवल हम भारतीयों के लिए नहीं सारे विश्व के लिए। जिस राष्ट्र नागरिकों के जीवन में राष्ट्र प्रथम रहता है और वे उसका भोग नहीं करते संतान बनकर भक्ति करते हैं। ऐसा राष्ट्र निश्चय ही अमर राष्ट्र बनकर अपने परम वैभव को प्राप्त होता है इसमें संशय नहीं। यही है 'जनगणमन का वन्देमातरम्'। जैसा इस वैदिक प्रार्थना के भावानुवाद में कहा है।

'हो विचार समान सबके, चित्त मन सब एक हो'
यही है 'जनगणमन' और गणतंत्र का मूलमंत्र।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- पतंगोत्सव -पूनम पाण्डे ०५
- लाल डब्बे का रहस्य -महेश कुमार केसरी ०७
- रेड बैंच -डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा' २०
- जन जन देशभक्त -गरिमा जोशी पंत २४
- अनेक छवियों के स्वामी -डॉ. सेवा नंदवाल ३२
- मकर संक्रान्ति -मधु गोयल ३६
- धन्यवाद मुंबई -ताराचंद मसकाने ४८

छोटी कहानी

- बिटिया का सच -डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव १९

लोक कथा (पंजाबी)

- मुर्गे ने ऐसे बाँग दी - भूपिन्दर सिंह 'आशट' ४५

एकांकी

- स्वच्छ गुड़ की मिठास -संजीव जायसवाल 'संजय' २८

बौद्धिक क्रीड़ा

- भूल भुलैया -चांद मोहम्मद घोसी ०६
- इनसे सीखिए -राजेश गुजर ०९
- जरा बताओ तो -संकेत गोस्वामी २७
- विचित्र किंतु सत्य -डॉ. श्याम मनोहर व्यास ४३
- बाल मुकरियाँ -पं. नन्दकिशोर 'निर्झर' ४७

कविता

- वीर सुभाष -डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ०२
- महाकुंभ मेला -गोपाल माहेश्वरी ३८

स्तंभ

- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भण्डारी १०
- बालसाहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' ११
- छः अँगुल मुस्कान १४
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल १५
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक १७
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३१
- लोकमाता अहिल्याबाई होळकर -अरविन्द जवळेकर ३४
- मैं संघ हूँ -नारायण चौहान ४०
- पुस्तक परिचय - ४४
- आपकी पाती - ४६

चित्रकथा

- गद्दारी -संकेत गोस्वामी २३
- २६ जनवरी की परेड -देवांशु वत्स ३५
- अनोखी याददाश्त -देवांशु वत्स ३९

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **"मन्दसौर संजीत मार्ग SSM"** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

पतंगोत्सव

– पूनम पांडे

ईशा एक वर्ष से अपने शहर से बाहर नैनीताल में पढ़ाई कर रही थी। उसको पिछले कुछ दिनों से मकर संक्रांति की आतुरता से प्रतीक्षा थी। इन दिनों उनकी पूरे एक महीने की लंबी छुट्टी होती थी। वैसे तो नैनीताल और रामपुर में उसके घर और छात्रावास की बस पाँच ही घंटी की दूरी थी और बस की गति अच्छी थी, पर आज ईशा के मन में उमंग ही अलग थी। उसका मन करता था कि पंख लगाकर उड़ जाये और अपने माता–पिता भाई के पास आ जाये।

इसलिए आज जिस दिन से अवकाश आरंभ हुआ वो उसी दिन सुबह ही, बस से रामपुर को चल पड़ी। सारे रास्ते वो बस मकर संक्रांति के लड्डू, नमकीन चिवड़ा और पतंगोत्सव को ही याद कर रही थी।

उसको यह ध्यान ही नहीं था कि इस बस में आगे कहाँ–कहाँ, कितनी सवारियाँ चढ़ीं, धूम्रपान करने वालों को कंडक्टर ने कितना दंड लगाया आदि आदि। यहाँ तक कि, रामपुर आ गया और इतना बड़ा आकाशवाणी का कार्यालय सामने से निकला पर उसे भान ही नहीं। पहुँच गये कि आवाज से वह अपने वर्तमान में लौट आई।

किन्तु जब वह बस से उतरी तो उसने बस स्टैंड पर वो पुराना आँवले का पेड़ देखा। तो उसे आंवले की मीठी चटनी याद आ गई। और, फिर सामान और बैग नीचे उतारते हुए तो अचानक उसे हँसी आ गई। वस्तुत: ईशा और उसका भाई आँवला खाकर पानी पी लेते और पानी इतना मीठा स्वादिष्ट लगता कि वे भाई–बहन ऐसा बार–बार किया करते।

एक बार तो आँवला खाने और बार–बार पानी पीते रहने से उन दोनों का पेट ही फुटबॉल जैसा हो गया था। ईशा ने देखा कि पेड़ के चारों ओर उसकी प्रिय सेम की फली की लता लिपटी हुई थी। सेम की

फली की सब्जी पराठे के साथ कितनी स्वादिष्ट लगती है ईशा यही सोच रही थी।

तभी ना जाने यह देखकर उसको किस बात की याद आयी कि वो अपनी भीगी आँखों को रूमाल से पोंछने लगी।

तभी उसने मस्तिष्क पर जोर लगाया और उसको स्मरण हो आया कि जब वो बारहवीं कक्षा में पढ़ रही थी तब उसके विद्यालय में बहुत सुंदर-सा उपवन था वहाँ पर माली काका ने तिल निकालकर सबको दिये और कहा कि घर पर लड्डू बन रहे हैं तो यह तिल भी उपयोग में लेना। तब उनके सबने पहली बार तिल का पौधा देखा और ताजे तिल की महक।

यही सब सोचते-सोचते ही घर आ गया था। भाई तो बहुत ही उत्साहित था। घर पर काफी, कहवा और बढ़िया चीजें खाकर ईशा की बहुत सेवा हो रही थी किन्तु ईशा का मन कहीं खो-सा गया था।

जब सबने जोर देकर कारण पूछा तो ईशा ने बता दिया कि- ''विद्यालय के बगीचे की, मैदान की रह-रहकर याद आ रही है।''

''अरे...! शाबाश वहाँ जाना और वहाँ पतंग उड़ाना और सारी याद ताजी करके आना।'' उसकी इच्छा को सुनकर माँ ने कहा।

माँ की बात सुनकर ईशा उछल पड़ी। वह अपने भाई राजू के साथ अपने और भाइयों को बहुत ही खुशी-खुशी पतंगोत्सव मनाने विद्यालय के बगीचे और मैदान में चली आई थी।

ईशा को आज पतंगोत्सव के लिए सब सामान रखने में बहुत ही आनंद की अनुभूति हो रही थी। रंग-बिरंगी पतंग, लड्डू, नमकीन, पापड़ से उसकी खुशी और भी इंद्रधनुषी हो रही थी।

जब वह बगीचे में घूमकर और पतंगोत्सव में सम्मिलित होकर मकर संक्रांति का त्यौहार मनाकर वापस लौटने लगी तो कोयल और बुलबुल गा रही थी। ईशा की आँखें भर आईं। आज उसने अविस्मरणीय मकर संक्रांति मना ली थी।

- अजमेर (राजस्थान)

भूल-भुलैया ख से खरगोश

- चाँद मो. घोसी

अपनी मन-पसन्द गाजर खाने को खरगोश का जी ललचा रहा है। सही मार्ग से आप खरगोश को गाजर तक पहुँचाने में सहायता कीजिए।

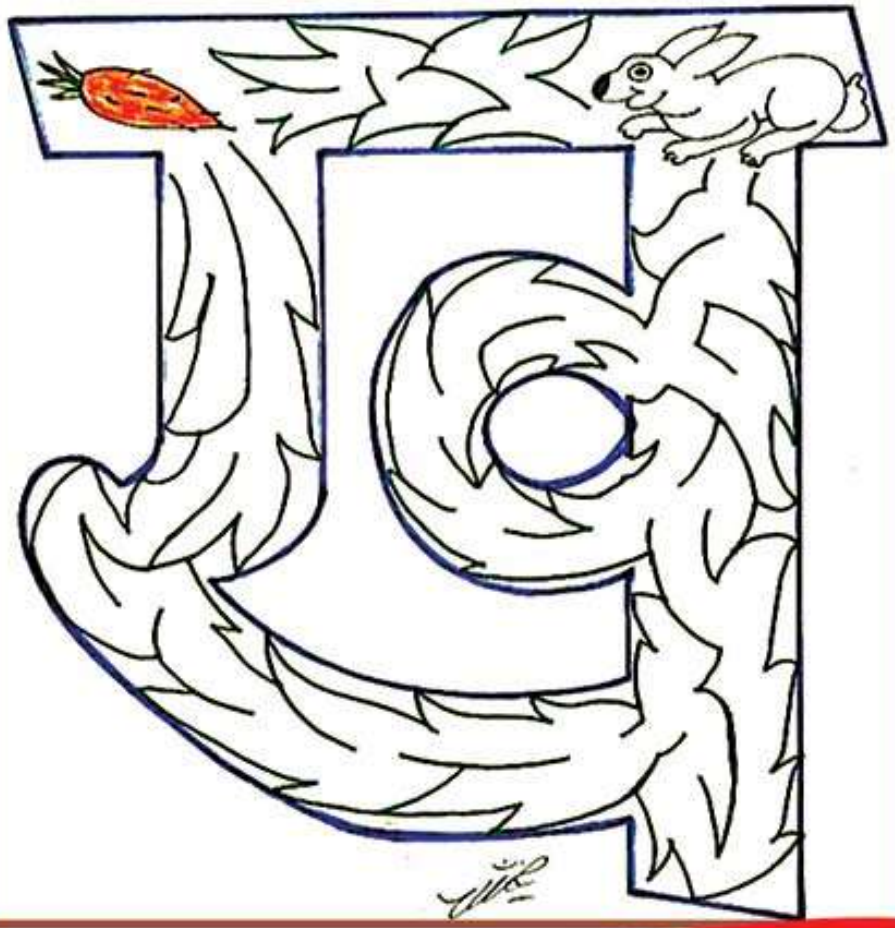

लाल डब्बे का रहस्य

– महेश कुमार केशरी

बसंत नौवीं कक्षा में पढ़ता था। वो, कक्षा के और विद्यार्थियों की तुलना में थोड़ा सुस्त–सा लड़का था। और, उसकी कुछ विषयों जैसे गणित और विज्ञान में पकड़ बहुत कम थी। इस कारण उसे थोड़ी–सी हीन भावना का अनुभव होता था। अपने मित्रों चमन और मयंक के परामर्श से उसने गणित की कोचिंग लेने का निर्णय लिया।

रवि जी उसकी कक्षा के अध्यापक और साथ ही साथ विज्ञान और गणित के बहुत ही अच्छे शिक्षक भी थे। रवि जी का घर और बसंत का घर बहुत ही आस–पास था। घर पास होने के चलते वह रवि जी के घर ट्यूशन लेने जाने लगा। वो रवि जी से कोचिंग लेता रहा।

इससे उसका गणित और विज्ञान धीरे–धीरे बहुत ही अच्छा हो गया। समय धीरे–धीरे बीत रहा था। बसंत को पढ़ते हुए छः महीने से अधिक का समय बीत गया था। लेकिन, एक बात बसंत ने अनुभव की थी कि जब–जब वह महीने के अंत में शुल्क देता रवि जी कुछ हिसाब बैठाकर उसमें से कुछ पैसे एक लाल रंग के डब्बे में रख देते। ऐसा वे हर महीने ही करते थे।

बसंत के अलावा चमन और मयंक, गणेश, मुकेश, रावत, सुजाता भी वहीं पढ़ते थे। वे लोग भी जब महीने के अंत में अपनी ट्यूशन का शुल्क देते। तो रवि जी उसमें से भी कुछ पैसे निकालकर उस लाल डब्बे में रख देते। बंटी को अब वहाँ पढ़ते हुए वर्षभर का समय हो गया था। लेकिन महीने के अंत में जब–जब वह शुल्क के पैसे देता तो रवि जी वही क्रम बारंबार से दुहराते।

रवि जी पूरे विद्यालय में एक कड़क या कह लें कठोर शिक्षक के रूप में जाने जाते थे। कोई भी विद्यार्थी रवि जी के सीधा सामना नहीं करना चाहता था। इस कारण बसंत जो कि अभी किशोरावस्था में था फिर भी वह रवि जी से डरता था। इसके कारण भी और कुछ संकोचवश भी। वह रवि जी से लाल डब्बे का रहस्य पूछ नहीं पाता था।

एक दिन वह ट्यूशन लेने रवि जी के घर गया था तो, रवि जी अपने लड़के और पत्नी से बुरी तरह उलझे हुए थे। प्रकरण ये था कि लाल डब्बे में से हिसाब के पैसों में से कुछ गड़बड़ थी। उनकी पत्नी बरखा बार–बार रवि जी से कह रही थी कि पैसे हम लोगों ने नहीं निकाले हैं। उनका लड़का दिनकर भी बार–बार यही बात दुहरा रहा था कि पिताजी मुझे आपसे जितने पैसों की आवश्यकता होती है वह तो मिल ही जाते हैं। फिर मैं क्योंकर आपके डिब्बे से पैसे निकालूँगा?

उनकी पत्नी भी बार–बार यही कह रही थी कि पता नहीं इनको क्या सूझती है कि वे लाल डब्बे में पैसे रखते हैं। दुनिया भर के बैंक क्या बंद हो गये हैं? जो आप लाल डब्बे में रखते ही क्यों हैं? और आप जब घर के सारे खर्चे और मेरे हाथ खर्चे के लिये भी पैसे दे ही देते हैं। तब भला मैं क्यों कर आपके पैसे लेने लगी?

खैर! कुछ दिनों के बाद रवि जी का हिसाब मिल गया था। जिसकी चर्चा अलग से एक दिन चली थी। वस्तुतः वे एक विद्यार्थी का पैसा अपनी दूसरी जेब में रखकर भूल गये थे। इसका स्मरण उन्हें सप्ताह भर बाद आया था।

एक दिन की बात है। उसे अच्छी तरह याद है। उस दिन मकर संक्रांति का दिन था। चयन और मयंक मोटर साईकिल से कहीं जा रहे थे। तभी उन्होंने देखा कि रवि जी एक खुले मैदान में खड़े हैं। और उनके आस–पास खाने–पीने की बहुत सारी चीजें रखी हैं।

टेबल पर एक ओर कोने में चिवड़ा–गुड़ और एक कोने में, लाई–तिलकुट की थैलियाँ, बंधी हुई

थीं। उसी टेबल पर दूसरे किनारे पर कुछ गर्म कपड़े जैसे– स्वेटर, शॉल की थैलियाँ रखी थीं। आज मकर संक्रांति होने के कारण वहाँ अनाथ और असहाय लोगों की एक बहुत लंबी पंक्ति लगी थी। रवि जी की सहायता के लिये उनके मुहल्ले के कुछ लड़के भी वहीं पर थे।

जिन्हें बसंत, ट्यूशन पढ़ने जाते समय प्राय: गली में देखता था। बारी–बारी से वे असहाय और नि:शक्त लोगों को चिवड़ा–गुड़, तिलकुट और लाई की थैलियाँ बाँटते। अशक्त लोग रवि जी को आशीर्वाद देते और एक–एक कंबल लेकर अपने घर की ओर चले जाते। रवि जी आवश्यकता के अनुरूप ही किसी को शॉल, कंबल और स्वेटर बाँट रहे थे।

जब सब बँट गया। तो बसंत, चमन और मयंक उनके पास आये। फिर बसंत ने रवि जी से पूछा– ''आप और ये सब... मैं कुछ समझा नहीं? आपको तो हम लोगों ने अब तक गणित और विज्ञान के एक कठोर शिक्षक के रूप में ही जाना था। आपका ये कौन–सा रूप है?''

बसंत और चमन–मयंक रवि जी के इस रूप को देखकर सचमुच में आश्चर्यचकित थे।

रवि जी, बसंत और चमन, मयंक से बोले– ''बेटा! मैं ये काम प्रत्येक वर्ष, मकर संक्रांति के दिन करता हूँ। मैं बहुत दिनों से ये देख रहा था कि तुम लोगों को लाल डब्बे के बारे में बहुत उत्सुकता होती थी। लेकिन या तो डर से या शायद संकोचवश तुम लोगों ने मुझसे कुछ नहीं पूछा। मैंने भी सारी बातें समय के ऊपर छोड़ दीं। मैं कभी नहीं चाहता था कि तुम्हें इस लाल डब्बे का रहस्य पता चले।

कोई बात नहीं! अब तो तुम सारी चीजें अपनी आँखों से देख ही रहे हो। मैं तुम्हें लाल डब्बे का रहस्य कभी बताना ही नहीं चाहता था। आजकल सोशल मीडिया का जमाना है और लोग अपने दान–पुण्य की कोई भी तस्वीर सोशल मीडिया पर डालने का कोई भी अवसर अपने हाथ से जाने देना नहीं चाहते। लेकिन शायद उन्हें पता नहीं है; कि ऐसा करके वे कमजोर और निर्धन लोगों का एक प्रकार से उपहास करते हैं। ऐसा करने से उन अशक्त लोगों को कितनी पीड़ा होती है। इसका अनुमान कोई नि:शक्त व्यक्ति ही जान सकता है।

कई बार मेरे कुछ शुभेच्छुओं ने मेरी फोटो भी इसी प्रकार डालने का प्रयत्न किया। किन्तु मैंने उन्हें कठोरता से मना कर दिया। जानते हो क्यों? क्योंकि, मुझे दिखावा करना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता।

फिर सोचा एक दिन तुम्हें स्वयं ही ज्ञात हो जायेगा। मुझे जो ट्यूशन पढ़ाकर शुल्क मिलता है। मैं उसमें से ही कुछ पैसे हर महीने बचाकर जिनको

अत्यधिक आवश्यकता है ऐसे गरीब लोगों के बीच बाँटने के लिये रख लेता हूँ। आखिर इस स्वार्थी, संसार में कौन किसके बारे में सोचता है? लेकिन, मैं हमेशा ऐसे गरीब और लाचार लोगों की सहायता करने के बारे में सोचता हूँ। ताकि इन जरूरतमंदों की कुछ सहायता हो सके।

मैं मानता हूँ; कि मेरा ये प्रयास बहुत ही छोटा है, किन्तु बूँद-बूँद से ही समुद्र भरता है। मैं सच बताता हूँ, मैं अपने स्तर से और जितनी मेरी क्षमता है उसके मान से जितना मेरी सामर्थ्य और मेरे पास उपलब्ध संसाधन हैं। उनसे इन गरीबों और अनाथों की सहायता करने का प्रयास करता हूँ।

और सच कहूँ, तो मैं सहायता करने वाला कौन होता हूँ? वस्तुत: यह कार्य ईश्वर ही मुझसे करवातें हैं। जानते हो इस अच्छे काम से मुझे इतनी हार्दिक प्रसन्नता मिलती है कि उसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता।

और हाँ! मुझे इसकी प्रेरणा मेरे पिता से मिली थी। वे भी एक शिक्षक थे। एक बात और इस बात की चर्चा तुम लोग किसी से भी मत करना। क्योंकि तुम लोगों को मेरी ऊपर कही बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि दान करते समय बायें हाथ को भी पता नहीं चलना चाहिए कि तुमने अपने ही दायें हाथ से दान किया है।

बसंत सोच रहा था कि रवि जी सचमुच में कितने महान हैं। एक तरफ वो, अनुशासन के पक्के हैं तो दूसरी ओर गणित के कठोर शिक्षक। ऊपर से नारियल की तरह कठोर हैं। लेकिन अंदर से उतने ही सुकोमल।

– बोकारो (झारखंड)

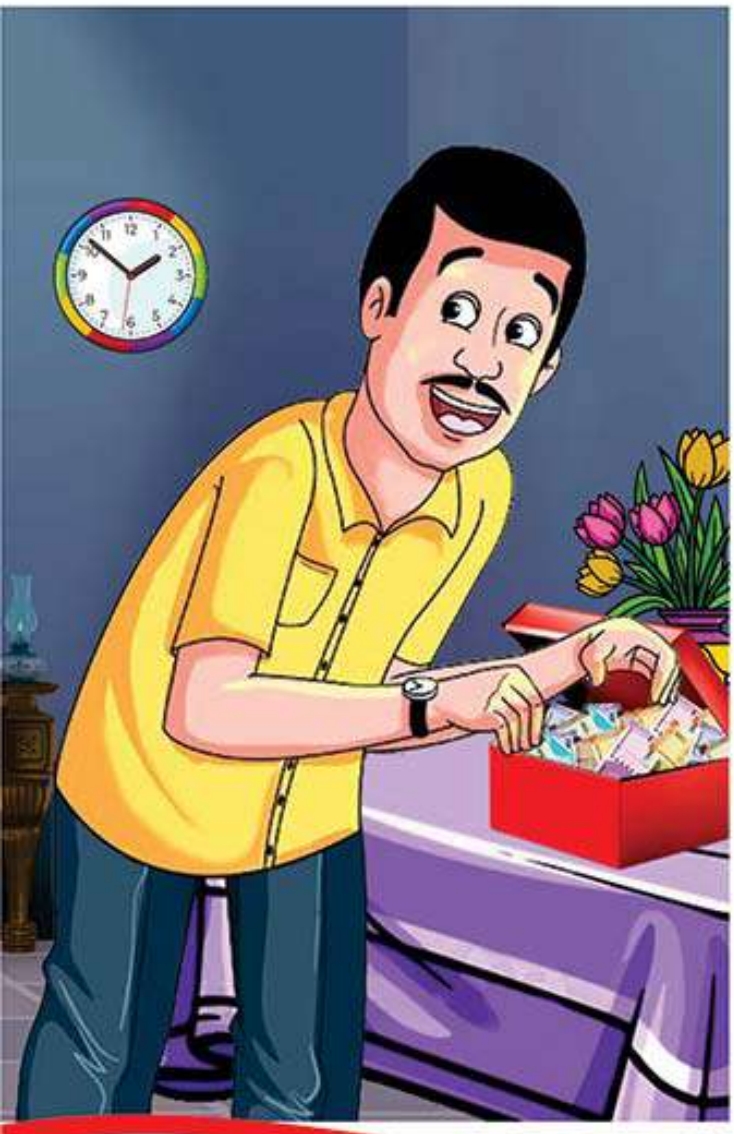

प्रात:चर्या

– डॉ. मनोहर भण्डारी

सुबह-सुबह पानी का सेवा अर्थात् उषापान– सुबह-सुबह रात भर तांबे के पात्र में रखा हुआ पानी बैठकर घूंट-घूंट पिएँ। जर्मनी में सम्पन्न एक ताजा अध्ययन के अनुसार तांबे के नैनों कण कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने में सक्षम होते हैं। मटकी का पानी क्षारीय होने से लाभदायक होता है और चिकित्सा विज्ञान एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार आरो पानी बहुत हानिकारक है। अथर्ववेद में पानी को सर्वश्रेष्ठ औषधि कहा गया है। श्रीरामचरित मानस और आईजी नोबेल विजेता प्रसिद्ध इम्युनोलॉजिस्ट और वैज्ञानिक **डॉ. जैक्स बेनवेनिस्ट** के अनुसार पानी में स्मृति होती है। इस दृष्टि से पानी को अभिमंत्रित भी किया जा सकता है। इसलिए पानी के मटके पर स्वस्तिक या ॐ लिखें। पानी पीते समय कोई भी मंत्र बोले, जैसे राम-राम। पानी को पीते समय अपने इष्टदेव का स्मरण करते हुए सोचें कि यह परम औषधि है और मेरे तन, मन और भावनाओं को स्वस्थ कर रहा है।

आँखों का स्नान– मुँह में पानी भरकर गालों को हनुमानजी की तरह फुलाएँ और आँखों को खुली रखते हुए पानी के छींटे दें। नित्य ऐसा करने से नेत्र ज्योति बढ़ती है।

मुखड़ा देखें दर्पण में– सुबह-सुबह दर्पण में अपनी छबि देखें, अपने भीतर विराजमान परमात्मा को मुस्काते हुए और झुककर प्रणाम करें। यह कल्पना करें कि आप पूर्णरूप से स्वस्थ हैं। अपनी पुस्तक **'ओल्ड ऐज, इट्स कॉज एण्ड प्रिवेंशन : द स्टोरी ऑफ एन ओल्ड बॉडी एण्ड फेस मेड यंग'** में सैनफोर्ड बेनेट ने आप बीती के अतिरिक्त एक अन्य सत्य घटना का उल्लेख किया है, जिसमें एक फ्रेंच लड़की १९ वर्ष की आयु से लगातार ३९ वर्ष की होने

तक दर्पण में चेहरा देखते हुए कहती थी कि मैं वैसी ही हूँ, जैसी कल थी। और जब उसका प्रेमी २० वर्ष बाद उससे मिला तो वह बिलकुल वैसी ही थी, जैसी १९ वर्ष की आयु में दिखा करती थी। ऐसी और भी सच्ची वैज्ञानिक कहानियाँ हैं, जिनमें बताया गया है कि कैंसर जैसे लाइलाज रोगों से कैसे इमेजीनेशन से छुटकारा पाया जा सकता है।

शौच करें, सोच कर– भारतीय शौच पद्धति (स्क्वेटिंग) को कमोड की तुलना में अमेरिका के प्रोक्टोलॉजिस्ट **डॉ. माइकेल फ्रेलीच,** इजरायल के **डॉ. डोव सिकिराव, डॉ. बेरको सिकिराव, डॉ. वनेसा माटोस** वैज्ञानिक जोनाथन इज्बिट, डॉ. एच. आरोन आदि वैज्ञानिकों ने स्वास्थ्य की दृष्टि से श्रेष्ठ सिद्ध किया है। अप्रैल १९७९ के अंक में इजरायल जर्नल ऑफ मेडिकल साइंस में एक रिपोर्ट इस विषय में प्रकाशित हो चुकी है। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार भारतीय पद्धति से शौच के दर्जनभर से अधिक लाभ होते हैं। परन्तु यदि अक्षम हैं तो ही कमोड का उपयोग करें। फ्लश करते समय लिड को नीचे गिरा दें, ताकि फ्लश करने से एरोसाल प्रभाव के कारण रोगाणुओं से भरे मल के बादल पूरे टॉयलेट में ना फैल सकें।

– इन्दौर (म. प्र.)

बाल साहित्य के प्रयोगधर्मी लेखक और सम्पादक : मनोहर वर्मा

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

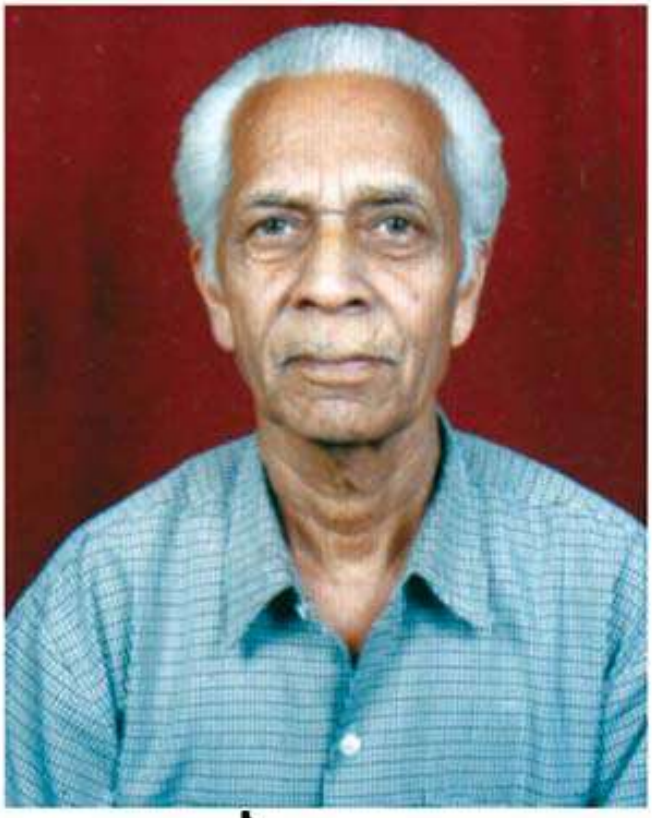

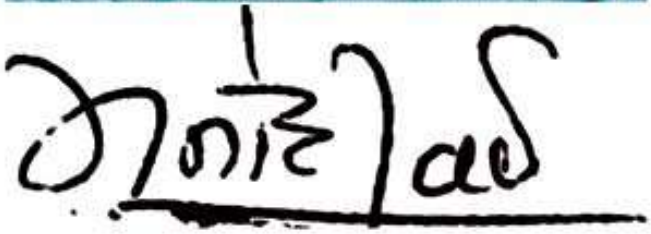

बाल साहित्य के संसार में मनोहर वर्मा की ख्याति प्रयोगधर्मी लेखक और सम्पादक के रूप में है। उन्होंने बाल साहित्य की अनेकानेक विधाओं में सफल लेखन कार्य किया। वे बाल हंस के सहयोगी संपादक रहे। वे एक सफल विश्लेषक भी थे और एक तरह से बाल साहित्य में अनुसंधानपरक कार्य के प्रणेता भी। उनके द्वारा सम्पादित भारतीय बाल साहित्य विवेचन ग्रंथ हिंदी बाल साहित्य में पी–एच. डी. उपाधि पाने के लिए आधार ग्रंथ बना। वे ऐसे कर्मठ लेखक थे जिनका काम बोलता है।

मनोहर जी का जन्म ७ अगस्त १९३१ को समर्थ व्यवसायी बसंतीलाल के पुत्र के रूप में अजमेर में हुआ था। यहीं उनका निधन २ मई २०१५ को हुआ।

जीविका के लिए उन्होंने रेल विभाग में कार्य किया। उनका लेखन १९५४ में प्रारंभ हुआ। बच्चों के लिए उनकी पहली कहानी 'नन्हे जासूस' मनमोहन मासिक में प्रकाशित हुई थी।

राजस्थान साहित्य अकादमी से उनके अतिथि संपादन में जुलाई–अगस्त १९६७ में प्रकाशित मधुमती पत्रिका का भारतीय बाल साहित्य विवेचन विशेषांक आज भी बेमिसाल है। बाद में इसे पुस्तकाकार भी प्रकाशित किया गया।

१९६५ में बाल साहित्य वार्षिकी का संपादन करने वाले वे पहले व्यक्ति थे। वे १९८६ से १९९२ तक लोकप्रिय पत्रिका 'बाल हंस' के सहयोगी संपादक भी रहे। इसके लिए वे प्रतिदिन अजमेर से जयपुर की यात्रा करते थे।

वर्मा जी ने बाल साहित्य सर्वेक्षण की दिशा में भी अभूतपूर्व कार्य किया। उनके द्वारा निर्मित प्रश्नावलियाँ बाल साहित्य के सार्थक लेखन की दिशा में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुईं।

उन्होंने लगभग दो सौ पुस्तकें लिखीं। इतनी ही पुस्तकों का सम्पादन भी किया। बाल साहित्य में 'बाल बुक बैंक योजना' उन्हीं की देन थी।

वर्मा जी ने बाल कविताओं का भी सृजन किया

लेकिन बाल गद्य साहित्य में उनका विशिष्ट योगदान है। उनके लोकप्रिय बाल कहानी संग्रह हैं– चंपक और मचलू, भुलक्कड़ बिन्नी, लड़ाई के मैदान से खत, मैं नेहरू बनने चला, तमाशे में तमाशा, म्याऊँ म्याऊँ, बंटी का स्कूल, चंदा मामा और बुलबुले, केकड़ा पंडित की पाठशाला, भालू दादा का स्कूल, मछलियों का खजाना, मोतियों की खेती, हाथी दाँत का पिंजरा, ज्ञान के मोती, लौट आ चूं चूं, अनोखे मेहमान, मचलू का दर्द, बाँसुरी वाला, मोती की चमक, मेंढकों का आंदोलन, फिर आऊँगा दादी, हाथी बंदर और खरगोश। उनके प्रमुख बाल उपन्यासों में पिलपिली बहादुर, सोनाबाला और बौने, एक थी चुहिया दादी, मधु, लोहा सिंह, थ्री टाइगर्स, हम हारेंगे नहीं, वचन का मोल अपनी नई शैली और अनूठे अंदाज के लिए चर्चित हैं।

उन्होंने सूचनात्मक साहित्य भी लिखा। उनकी पुस्तक शरीर के नव रत्न तो बच्चों में खूब लोकप्रिय हुई। पत्र साहित्य के अंतर्गत चिड़ियों के खत बच्चों के नाम, नाट्य विधा में गाड़ी रुकी नहीं, नया इतिहास लिखना है, नाटक से पहले और साक्षात्कार विधा में जानवरों से इंटरव्यू जैसी उनकी पुस्तकें यह सिद्ध करती हैं कि बाल साहित्य के क्षेत्र में उनका लेखन बहुविधि और बहु विषयक था। वे पारंगत लेखक थे।

उनकी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं– आओ खेलें, फुटबॉल, तमाशे में तमाशा, इनसे भी मिलिए, चंदा मामा और बुलबुले, विश्व प्रसिद्ध महिलाएँ, टिमटिम करते तारे, मैं पृथ्वी हूँ, आग का गोला सूर्य, आओ खेलें: तीन खेल, हमारे समाज सुधारक (दो भाग), हमारे धार्मिक महापुरुष, हमारे संत (दो भाग), हमारे क्रान्तिकारी (दो भाग), हमारे वैज्ञानिक (दो भाग), म्हारो प्यारो राजस्थान, देश की खातिर, हम एक देश एक, पढ़ते जाओ, बढ़ते जाओ, सेवा के फल: मीठे फल, रोज पढ़ो: रोज गुनो, थकना मत: रुकना मत, तीन टिकट (चित्र कथा), पेड़ मेरा दोस्त (पर्यावरण), गिलहरी का खत आदमी के नाम (पर्यावरण), लोकप्रिय नेता, अंतरिक्ष के शटल इत्यादि।

बाल साहित्य की अनन्य सेवाओं के लिए उन्हें भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय, राजस्थान साहित्य अकादमी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान सहित अनेक संस्थाओं ने सम्मानित किया। आइए, पढ़ते हैं उनकी एक **मजेदार कहानी**–

यह मैं हूँ

न जाने एक रात बैठे–बैठे क्या सूझी कि हाथ की उस किताब को जिसे मैं पढ़ रहा था एक ओर रख दिया। कुछ मजा भी नहीं आ रहा था। मैं एक अत्याधिक आधुनिक कमरे में बैठा कम्प्यूटर को निहार रहा था। कम्प्यूटर किसी की भी कोई

जानकारी देने में सक्षम था। क्या यह सचमुच संभव है कि कम्प्यूटर हमारे बारे में सच–सच बता दे?

मैं थोड़ी देर यूँ ही लेटा रहा, सोचता रहा, विश्वास अविश्वास की लहरों में डूबता उतरता रहा, फिर कापी उठाकर कुछ प्रश्न लिखने लगा। ये प्रश्न मेरे अपने ही बारे में थे। सोचा 'चलो, कम्प्यूटर की भी परीक्षा हो जाए। यदि ये अन्य लड़के के स्वभाव, चरित्र, रुचि आदि के बारे में बताते हैं तो देखूँ मेरे बारे में कितना सच है?

दूसरे दिन मैंने वह प्रश्वाली कम्प्यूटर को पहुँचा दी, कम्प्यूटर से प्राप्त मेरी प्रश्नावली से जो उत्तर प्राप्त हुए वे इस प्रकार थे–

मेरी असली नाम– 'ग' अक्षर से प्रारंभ होता है।

मेरे घर के नाम – का पहला अक्षर 'ब' है।

मेरी वर्तमान आयु– १६ वर्ष, ५ माह, ११ दिन, १८ घंटे, १६ मिनट है।

मेरे शरीर का रंग– गेहुँआ है।

मेरा कद– १३० सेमी. है।

मेरी आँखों का रंग– भूरा है।

मेरे दाँत– छोटे, पीलापन लिए हुए हैं।

मेरी नाक की बनावट– ऊपर से चपटी, नीचे से फैली हुई है।

मेरा निचला होंठ– मोटा और काला है।

मेरे बाल– घने व काले गर्दन तक लटके हुए हैं।

मेरा चेहरा– त्रिभुजाकार, कनपटियों पर चौड़ा, गाल बैठे हुए, ठोड़ी तीखी है।

मेरे जीवन का उद्देश्य– खाओ, पीओ और मौज उड़ाओ।

खाने में मेरी पसंद– सड़क पर चाट, घर में गुड़ (चोरी से) और दावत में गुलाब जामुन।

मुझे सुख पहुँचाता है– पलंग पर पड़े रहना।

मुझे आनंद आता है– दूसरों को लड़ाने में।

पढ़ने में मेरी पसंद– जासूसी और अपराध साहित्य।

मुझे दुःख पहुँचा है– बात–बात में टोका जाना।

मेरी कमजोरी– पिता का सामना करना।

मैं बचना चाहता हूँ– मेहनत से।

मैं झिझकता हूँ– किसी नये काम को करने या सीखने से।

मुझे चिढ़ होती है– उन्नति करते मित्रों और भाई–बहनों से।

मैं बहुत बोर होता हूँ– पढ़ाई की बातें करने वाले मित्रों से।

मैं जी चुराता हूँ– गृहकार्य से।

मैं भूल जाना चाहता हूँ– पढ़ाई से प्राप्त शर्मनाक अंकों को।

खूब आनंद आता है– इधर–उधर घूमने में।

मेरे स्वभाव की विशेषता– ईर्ष्या व चुगली।

मेरा दुश्मन– मेरी निंदा करने वाला।

मेरी पीड़ा– कोई घर में प्यार नहीं करता।

मैं प्यार करता हूँ– केवल माँ को।

मेरी हॉबी– खेलते बच्चों का खेल बिगाड़ना या उन्हें रुलाना।

मुझ पर असर नहीं होता– उपदेशों का।

मेरा सपना– देश का सबसे बड़ा पूँजीपति बनूँ।

मैं खुलकर हँसता हूँ– किसी को गिरते देखकर।

मेरी पसंद का खेल– कबड्डी।

मैं उत्तेजित हो उठता हूँ– अपनी उपेक्षा करने वाले को देखकर।

मेरा सबसे बड़ा अवगुण– किसी पर विश्वास नहीं करना।

मैं प्रसन्न होता हूँ– अपनी प्रशंसा से।

बहुत बुरा लगता है– अपने कपड़े धोना।

सबसे बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण क्षण– शाला से गोल होने पर पकड़े जाना।

मैं सफल होता हूँ– दृढ़ निश्चय कर लेने पर।

मेरे सच्चा मित्र– कोई नहीं।

मेरी उपलब्धि– १६वें वर्ष में ८वीं तक पढ़ाई।

मेरा भविष्य– अंधकारमय।

बड़ा होकर बनूँगा– चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी।

प्रश्नावली के उत्तरों को पढ़कर चीख निकल जाती है–

''नहींऽऽऽ! कभी नहीं!'' यह सब झूठ है, कम्प्यूटर झूठा है (नहीं, यह सब बातें सच हैं... मैं सच्चाई से मुँह मोड़ना चाहता हूँ....) ठीक है, मैं इस प्रकार कम्प्यूटर को झूठा सिद्ध कर दूँगा (कागज के टुकड़े-टुकड़े करते हुए.... मैं सिद्ध कर दूँगा कि वह मैं नहीं था। तब कम्प्यूटर भी कहेगा कि तुम सचमुच बदल गये हो और मैं कहूँगा– ''देखो! मैं यह हूँ देखो, पहचानो मुझे यह मैं हूँ.....।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

स्तंभ

छः अँगुल मुस्कान

रामू और **श्यामू** को तीन बम मिले। दोनों उन्हें पुलिस को देने चल पड़े।

रामू– यदि कोई बम रास्ते में फट गया तो?

पप्पू– झूठ बोल देंगे कि हमें दो ही बम मिले थे।

*****

पप्पू कक्षा में गधा लेकर गया।

शिक्षक– तुम्हें शर्म आनी चाहिए।

इसको यहाँ क्यों लाए हो?

पप्पू– आचार्य जी! आपने ही तो कहा था कि आपने कई गधों को भी इंसान बनाया है। अब बनाइए।

*****

पप्पू– जब मैं सिर के बल खड़ा होता हूँ तो खून सिर की ओर दौड़ता है, पर सीधा खड़ा होने पर पैरों की ओर क्यों नहीं?

डॉक्टर– क्योंकि सिर की तरह तुम्हारे पैर का भाग खाली नहीं है।

*****

पिताजी– ये क्या..... गणित में तुम्हें केवल १ नंबर मिला है?

बेटा– पिताजी! जब इरादों में हो दम तो हौसलों में क्यों नहीं....।

पिताजी– क्या डायलॉग मार रहे हो ये?

बेटा– केवल दो शून्य का अंतर है, आ जाएँगे। धैर्य रखिए।

दादी का सहारा सबका सहारा : पार्थ बंसल

– रजनीकांत शुक्ल

''दादी क्या हुआ यहाँ क्यों बैठी हो?'' पार्थ ने सीढ़ियों के पास बैठी दादी से पूछा।

''बेटा! आ जा, मुझे जरा दूसरे कमरे में तो ले चल, कब से प्रतीक्षा में बैठी हूँ। कोई दिखाई ही नहीं दे रहा है।''

''अरे दादी! आओ चलो।'' पार्थ ने आगे बढ़कर दादी को सहारा दिया। ''मुझे लगता है कि मुझे ही आपके लिए कोई सहारा खोजना पड़ेगा।'' पार्थ ने मुस्कुराते हुए कहा।

''तू ही तो है मेरा सहारा, मेरी आँखों का तारा, मुझे किसी दूसरे सहारे की क्या आवश्यकता है।'' दादी ने भी तुरन्त उत्तर दिया।

''दादी! मैं हर समय तुम्हारे साथ नहीं रहता हूँ न, शाला भी तो जाता हूँ। जब घर से बाहर रहूँगा तब भी मैं आपके साथ रहूँ ऐसी व्यवस्था करना चाहता हूँ।'' पार्थ ने रहस्यपूर्ण ढ़ंग से कहा।

''पार्थ! घर से बाहर रहेगा तब भी मेरे साथ रहेगा। ये कैसी पहेलियाँ बुझा रहा है तू?'' दादी ने हैरान होते हुए कहा।

यह बात उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात जिले के पुखरायां कस्बे की है। पार्थ यहाँ के जिला मुख्यालय माती के केन्द्रीय विद्यालय में आठवीं कक्षा के छात्र थे। उनकी दादी को पार्किन्सन नामक बीमारी थी। उनका उपचार मेन्दान्ता हस्पताल में चल रहा था। दादी के साथ हस्पताल जाने पर पार्थ को डॉक्टर से पता चला कि यह केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र का एक विकार है जिसमें रोगी के शरीर के अंग कंपन करने लगते हैं और भारीपन के कारण पाँव जमीन से कम उठते हैं। ऐसा मस्तिष्क में कुछ तंत्रिका कोशिकाओं के खराब हो जाने या उनके नष्ट हो जाने के कारण होता है। यह कोशिकाएँ ब्रेन में डोपामाइन नामक रसायन के कारण बनती हैं।

दादी को लाते ले जाते समय उनके पैर को पार्थ उठाकर रखते थे। वे चलने–फिरने के लिए दूसरों पर निर्भर थीं। उनकी परेशानी को देखकर पार्थ के मन में विचार आया कि क्यों न उनकी छड़ी में कुछ ऐसा सुधार किया जाए जिससे उनकी घर के लोगों पर निर्भरता कम हो जाए। कई बार घर के लोग काम में लगे होते हैं तो दादी सहारे के लिए किसी का आसरा तकती हैं। पिताजी के कार्यालय और उसके शाला जाने पर घर में अकेली माँ ही तो रह जातीं हैं। अब वे अगर किसी काम में लगीं हैं और दादी को कहीं जाना हो तो वे कैसे चल फिर पाएँगी?

बस पार्थ को धुन सवार हो गई कि दादी का सहारा बनाना है। पार्थ को पता था ऐसे मरीज के सामने कोई बाधा के तौर पर पेन–पेंसिल या पैर आदि रख दिया जाए तो उसके दिमाग में संकेत चला जाता है और वह पैर उठाकर चलने लगता है। पार्थ ने दादी के साथ भी यह प्रयोग करके देखा। अब हर समय तो बाधा को सामने किया नहीं जा सकता इसलिए पार्थ ने सोचा क्यों न वस्तु की जगह रोशनी का प्रयोग

किया जाए ताकि बाधा का भ्रम पैदा हो और दादी बिना किसी सहारे के पैर ऊपर उठा लें और उस बाधा को पार कर जाएँ। बस फिर क्या था पार्थ लग गए अपने विचार को प्रयोगात्मक रूप देने में... एक दिन उन्होंने अपनी दादी की स्टिक ली और उसका ऊपर से नीचे तक निरीक्षण किया। उन्होंने उस स्टिक में एक एल. ई. डी. लाइट लगा दी जिससे प्रकाश की एक लकीर बनती थी जो सामने की बाधा से टकराकर दादी को संकेत देती थी और दादी अपनी स्टिक के साथ अपने पैर उठाकर आगे बढ़ने लगीं। बाद में पार्थ ने उसमें सुधार करके 'लेज़र' लाइट लगा दी। लेज़र की लाल रोशनी और अधिक अच्छा परिणाम दे रही थी।

अब दादी की दूसरों पर निर्भरता नहीं रही। वे अपनी आवश्यकता के अनुसार मनमर्जी से आने जाने लगीं। यह देखकर घर के सारे लोग बहुत प्रसन्न थे। दादी तो पार्थ को मुँह भर-भरकर दुआएँ देती थीं। इसी बीच दादी को दिखाने के लिए जब पार्थ के पिताजी चिकित्सालय गए तो अपने साथ उस स्टिक को भी ले गए। जिसे उन्होंने दादी का उपचार करने वाले डॉक्टर को दिखाया तो वे डॉक्टर बहुत प्रसन्न हुए ''अरे! यह तो चमत्कार हो गया।'' उन्होंने इस आविष्कार की बहुत प्रशंसा की। साथ ही इसे पार्किन्सन के मरीजों के लिए बहुत उपयोगी पाया। उन्होंने पार्थ की सराहना करते हुए कहा कि हमारे देश में ऐसे उपकरणों की बहुत कमी है आप इसका पेटेंट करवा लीजिए। मैं इस स्टिक को मरीजों से परिचित कराऊँगा। उनकी ऐसी प्रशंसा सुनकर पार्थ के पिताजी को लगा कि सचमुच पार्थ ने कोई बड़ा काम कर दिया है जिसे संसार के सामने आना चाहिए। वे बहुत प्रसन्न थे।

इसी बीच उन्हें अहमदाबाद की नेशनल इनोवेशन फाउण्डेशन संख्या के बारे में पता चला। जो आम जीवन को सुविधाजनक बनाने के लिए की गयी खोजों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर बच्चों को 'ए. पी. जे. अब्दुल कलाम नेशनल इगनाइट पुरस्कार' देती थी। २०१६ में पार्थ ने इस प्रतियोगिता में आवेदन कर दिया। देशभर से आई ५५ हजार प्रविष्टियों में से कुल २८ तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने पार्थ को यह पुरस्कार सात नवंबर २०१६ को राष्ट्रपति भवन में प्रदान किया।

पार्थ को एक राष्ट्रीय पहचान मिल गयी थी। उन्होंने राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान हैदराबाद में आयोजित 'नेशनल इनोवेशन समिट' में भाग लिया। यहाँ वे देश के सौ आविष्कर्ताओं के साथ देश के उपराष्ट्रपति द्वारा सम्मानित हुए। मजे की बात ये थी कि सम्मानित प्रतियोगिता में वे सबसे छोटी आयु के प्रतिभागी थे। आई. आई. एम. अहमदाबाद ने पार्थ को अपने यहाँ आमंत्रित किया। साथ ही असम के राज्यपाल ने भी उसे 'सूर्यदत्त नेशनल यंग अचीवर्स अवार्ड' प्रदान किया।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर पार्थ को वर्ष २०२० के राष्ट्रीय बाल शक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जिसमें उन्हें देश के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा पदक एक लाख रुपए नकद प्रमाण-पत्र और एक प्रशस्ति-पत्र दिया गया। उनकी प्रगति रुकी नहीं है। पार्थ की रोबोटिक्स में रुचि है और वे जल संरक्षण और विद्युत संरक्षण के क्षेत्र में भी काम कर रहे हैं। उनकी उपयोगी 'लेजर स्टिक' का पेटेंट इनोवेशन फाउण्डेशन संस्था की सहायता से हो चुका है।

नन्हे मित्रो!

अपनों को सुख देना चाहो, सबको मिल जाएगा,
पानी हवा धूप पाए तो गुलशन खिल जाएगा।
लगे रहो एक लगन बनाकर, पा जाओगे मंज़िल,
एक लक्ष्य के करो हवाले जीवन बन जाएगा।।

– नई दिल्ली

सास भी माँ होती है

– तपेश भौमिक

गोपाल का विवाह हुए अभी कोई एक माह बीत चुका था। नई बहू आकर सासू माँ के काम–काजों में हाथ बँटाने लगी थी। साथ ही उनकी सेवा–सत्कार भी अपनी क्षमतानुसार करने लगी थी। इतना होने पर भी सासू माँ बहू से अप्रसन्न रहने लगीं। आस–पड़ोस की औरतें यह टोह लेने के लिए आतीं कि गोपाल के घर सास–बहू में कैसी पटती है? चूँकि सास–बहू में तकरार कभी नहीं हुई थी, इसलिए उन्हें निराशा ही हाथ लगती। कुछ दिन तक गोपाल की माँ ने बहू के बारे में कुछ विशेष नहीं कहा। वह बहू की निंदा करके अपने परिवार की साख को गाँव की वाचाल महिलाओं के लिए मुद्दा नहीं बनाना चाहती थीं।

लेकिन एक बात दिन के उजाले कि भाँति मुँह–दर–मुँह फिरने लगी कि गोपाल की बहुरिया उसकी माँ को 'माँ' कहकर नहीं पुकारती है। सासू माँ भी कैसे पचाती इस बात को! वह भी आखिरकार एक गंवई औरत ही तो थीं। बातों–बातों में बात मुँह से निकल ही जाती है। जब भी सासू माँ बहू को बुलाती तो वह पहुँच कर कहती कि कहिए क्या काम है? कई दिन तो ऐसा भी हुआ कि कोई देहरी पर आकर गोपाल की माँ के बारे में पूछे तो बहू पुकार कर कह देती कि आपका बुलावा आया है। इस बात को कई कुचक्री घुमक्कर औरतों ने ताड़ लिया।

गोपाल इस बात को लेकर परेशान रहने लगा। अब यदि वह पत्नी पर हुक्म चलाए तो वह कहीं गुस्से में मायके न चली जाए। इसलिए उसने एक दिन योजना बनाई कि सपरिवार नवद्वीप जाकर महाप्रभु के दर्शन कर आए तो पत्नी की मति बदल सकती है।

कृष्णनगर से नवद्वीप की दूरी भी कोई विशेष नहीं है। भोर को नाव से निकले तो दोपहर तक पहुँचा

जा सकता है। ऐसा सोचकर सास-बहू और गोपाल, तीनों तीरथ के लिए निकल पड़ें। सास ने बहू से कहा- ''बहू तू बड़ा भाग्यशाली है जो विवाह होते ही अपने पति के साथ तीरथ को जा रही है।'' बहू सारी राह 'हाँ-हूँ' में बात करती रही। इसी बीच गोपाल ने एक चाल चली। नदी की लहरों के बीच जब नाव हिचकोले खाने लगी तो वह जान-बुझकर नाव से बाहर गिर कर डूबने-तैरने की नौटंकी करने लगा। कभी दूर, कभी पास, वह सर उठाकर नाव तक आने का प्रयत्न करने लगा। इस पर गोपाल की माँ उतना डरीं नहीं जितना कि उसकी पत्नी। नाव के मल्लाह भी शोर मचाने लगे।

इस हादसे से डरकर गोपाल की बहुरिया अपनी सासूजी के पैरों को पकड़कर रोने लगी चीख-चीखकर कहने लगी कि- ''माँ! मैं इतनी भाग्यहीन हूँ कि तीरथ के रास्ते में पति को खो दूँगी ? मेरी माँ! आप मल्लाहों को कहिए न कि नदी में कूदकर आपके बेटे की जान बचाएँ। माँ मैं किस मुँह से गाँव लौटकर लोगों को मुँह दिखाऊँगी ?''

गोपाल ने पहले ही संकेत से माँ को बता दिया था कि घबराओ नहीं! माँ को भी पता था कि उनका बेटा प्राय: कुछ-न-कुछ खुराफात करता ही रहता है। इधर बहू 'माँ-माँ' कहकर चिल्लाए जा रही थी तो उधर गोपाल नाव के आसपास ही डुबकियाँ लगा रहा था। वह नाव के पास आकर पत्नी को यह कहने लगा कि अब बताओ कि तुम 'माँ' कहकर पुकारने में कभी अटकोगी तो नहीं ? अभी तो खूब 'माँ-माँ' कहकर चिल्ला रही थी! बहू ने एकबार फिर कहा- ''माँ जी! आपका बेटा मुझे बहुत सताता है।'' सासू माँ ने बहू की बलैया ली तो मल्लाह और अन्य यात्री हँस-हँसकर गोपाल को शाबाशी देने लगे। माँ की आँखों से खुशियों के आँसू बहते देखकर गोपाल ने केवल यह कहा- ''जय हो महाप्रभु की महिमा की।''

- गुड़ियाहाटी / कूचबिहार
(पश्चिम बंगाल)

समाचार

साहित्यिक संस्था सलिला एवं राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा १५वाँ राष्ट्रीय बाल साहित्यकार सम्मेलन

उदयपुर। प्रतिष्ठित बाल साहित्यिक संस्था सलिला (सलंबुर) द्वारा अपने १५वें राष्ट्रीय बाल साहित्यकार सम्मेलन २०२४ में स्थानीय विज्ञान समिति भवन में विभिन्न बाल साहित्यकारों को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया।

'देवपुत्र' के संपादक श्री. गोपाल माहेश्वरी को उनकी कृति 'सुरसारंग', प्रज्ञा गौतम को उनकी पुस्तक 'धरती छोड़ने के बाद', पूनम अहमद को हिन्दी 'मूनगेट' और मल्लिका मुखर्जी को 'जिन्दगी इम्तहान लेती है' के लिए **सलिला साहित्यरत्न सम्मान** से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर सर्व श्री. शिखरचंद जैन, रश्मि वार्ष्णेय, आकांक्षा दत्ता, यशपाल शर्मा, डॉ. इन्दु गुप्ता, प्रियंका गुप्ता का डॉ. लता अग्रवाल, दिवाकर राव, डॉ. शील कौशिक, नीना छिब्बर एवं रघुराज सिंह 'कर्मयोगी' को विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता उपविजेता के रूप में पुरस्कृत किया गया।

मंच पर सलिला संस्था की प्रधान डॉ. विमला भंडारी श्रीमती कुमुद वर्मा एवं श्रीमती रश्मि वार्ष्णेय की गरिमामय साहित्यिक उपस्थिति अहमदाबाद प्राप्त हुई। अध्यक्षता श्री. गोपाल माहेश्वरी ने की। सह संयोजक श्री. प्रकाश तातेड़ का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। संचालन श्रीमती शकुंतला सरूपरिया ने किया।

बिटिया का सच

– डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

दीप्ति के हाथ में घड़ी न देखकर उसके पिताजी एकाएक बोले– ''बिटिया रानी! मैंने तुम्हें अच्छी–सी घड़ी लाकर दी थी। किन्तु मैंने देखा– तुमने उसे एक दो दिन पहना। बस फिर तुम उसे बाँध नहीं रही हो।''

अचानक से पिता की बात सुनकर दीप्ति चौंक गई। वह मन ही मन सोचने लगी अब घड़ी के बारे में बोलूँ या झूठ! झूठ बोलूँगी तो कभी न कभी पकड़ा जाएगा और फिर झूठ बोलना पाप है। यह पिताजी ने ही तो उसे समझाया था।

दीप्ति बोली– ''पिताजी! मैं आपसे कुछ कहूँ तो आप मुझे क्षमा तो कर देंगे?''

दीप्ति की बात सुनकर पिताजी को लगा ये क्या कह रही है। उसकी बिटिया रानी। वे तुरंत बोले– ''बिटिया रानी! मैंने तो तुझे इतना प्यार दिया है कि कभी तुझे डाँटा तक नहीं। फिर तू ऐसा क्यों कह रही है?'' दीप्ति बोल उठी– ''पिताजी! मैंने आपके द्वारा लाई सुन्दर–सी घड़ी अपनी सहेली कंगना को दे दी। उसे उसकी बहुत आवश्यकता थी। वह अपने लिए घड़ी खरीद भी नहीं पा रही थी उसे प्रतिदिन सुबह जल्दी उठकर एक 'शो–रूम' पर काम करने जाना पड़ता है। बाद में वह कॉलेज पढ़ने आती है।''

दीप्ति की बात सुनकर पिताजी हँसकर बोले– ''बस बिटिया! इतनी–सी बात। चलो तुमने एक अच्छा काम किया। एक आवश्यकता वाले की आवश्यकता पूरी करके। तुम्हारे लिए एक और घड़ी ला दूँगा।''

पिताजी की बात सुनकर दीप्ति धीरे से बोली– ''पिताजी! मैं तो डर गई थी। आप अभी कहेंगे– 'इतनी अच्छी घड़ी दूसरे को क्यों दे दी?' पिताजी! मेरी उस सहेली के माता–पिता नहीं हैं। मैंने सोचा– मैं भी तो अपनी सहेली की कुछ सहायता कर सकती हूँ।'' दीप्ति की बात सुनकर पिता ने दीप्ति को गले से लगाकर उसकी पीठ थपथपा दी।

– ग्वालियर (म. प्र.)

रेड बैंच

– डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'

''विहान! बच्चे, जरा चिड़िया को दाना डाल दो, यह भूखी है इसलिए इतना शोर मचा रही हैं।'' सुबह –सुबह खिड़कियों में चिड़िया चीं–चीं का शोर मचा रही थीं। तो माँ ने विहान को आवाज लगाई, विहान अनमना–सा अपने कमरे से आया और उसने भोजन की मेज पर रख डिब्बे में से थोड़े से बाजरे के दाने लेकर बाहर खिड़की के पास फैला दिए। दाने के डालते ही चिड़िया का शोर और भी बढ़ गया। ऐसा लग रहा था कि ये अपने सभी साथियों को आवाज लगाकर आमंत्रण दे रही हों ''आओ... आओ, नाश्ता तैयार हो गया है।''

सभी बैठकर आराम से नाश्ता करने लगीं, उन्हें देखकर विहान को अपने सभी पुराने मित्र और भी याद आने लगे। टीनू, रानू, बिट्टू, शानू... और उसका मन एकदम उदास हो गया।

बात वास्तव में यह है कि विहान के पिताजी नए–नए स्थानांतरण होकर जबलपुर से इंदौर आए हैं। नए घर में माँ तो घर का सामान जमाने में व्यस्त हो गईं। साथ ही पड़ोसनों से थोड़ा परिचय कर लिया। पिताजी भी अपने नए कार्यालय के काम में काम में व्यस्त हो गए। लेकिन नया स्थान, नए लोगों के बीच विहान स्वयं को बड़ा ही अकेला अनुभव कर रहा था। उसके सारे साथी जबलपुर में ही छूट गए, उसे अपने मित्रों की याद उदास कर रही थी। चिड़ियों को देखकर मन में पुरानी यादें और भी उमड़ने लगी कि वह भी अपने मित्रों के साथ ऐसी ही मस्ती करता था। किन्तु अब..... अब तो वह अकेला ही रह गया! वो सोचने लगा, काश! चिड़िया की तरह मेरे भी पंख होते तो मैं भी उड़कर अपने मित्रों के पास पहुँच जाता।

माता–पिता विहान की परेशानी समझ रहे थे। इसलिए वह उसे रोज शाम को कहीं न कहीं घुमाने ले जाते। लेकिन वहाँ से आने के बाद विहान को फिर अकेलापन खलने लगता। छुट्टियाँ चलने से अभी उसका विद्यालय में प्रवेश भी नहीं हुआ था। वरना शाला में ही उसे कुछ मित्र मिल जाते। ऊपर से वह कुछ संकोची स्वभाव का था, माँ ने कई बार कहा चलो विहान शाम को कॉलोनी में घूमकर आते हैं। हो सकता है तुम्हें अपनी आयु के कुछ साथी मिल जाए। किन्तु विहान का पहल करके किसी से मित्रता करने में संकोच होता था।

वह माँ से कहता– ''माँ! मैं क्या उनके कहूँगा कि मैं अकेला हूँ... मुझे अपना मित्र बना लो.. उह... मुझे ये अच्छा नहीं लगता।'' आज माँ ने कॉलोनी की सखियों को चाय पर बुलाया ताकि सबसे पहचान हो सके। सभी पड़ोसनें आईं, अपने कमरे में बैठे–बैठे विहान सबकी बातें सुन रहा था और मोबाइल पर गेम खेल रहा था। माँ ने कहा भी कि आओ सभी से मिल लो, उन्हें नमस्ते कर लो, किन्तु उसने कहा मुझे शर्म

आती है माँ! मैं उन्हें जानता भी नहीं.. क्या कहूँगा? लेकिन उसे अच्छा लगा कि चलो माँ को तो उनकी सखियाँ मिल गईं। लेकिन बस मैं ही अकेला रह गया। तब सामने वाली चित्रा चाची ने ही कहा ''भाभी! आपका बेटा दिखाई नहीं देता?''

''विहान....विहान नाम है उसका... मैंने कहा था आप सबसे मिलने को वस्तुत: नई जगह, नए लोगों में उसे थोड़ा संकोच होता है बस इसी कारण से बाहर भी नहीं निकलता। विहान अकेला पड़ गया है, उसके सारे दोस्त वहीं छूट गए, इसलिए वह बहुत उदास रहता है।'' विहान के कानों में जैसे ही अपना विषय पड़ा उसके कान चौकन्ने हो गौर से सुनने लगे।

तभी चित्रा चाची बोलीं– ''अरे! उसमें उदास होने की क्या बात है, स्थानांतरण में तो ऐसा होता ही है। फिर जीवन में हमेशा वही मित्र तो नहीं रहते। नए मित्र बनते रहते हैं।''

''सच बात है बल्कि इसे ऐसा सोचना चाहिए कि पुराने मित्रों के साथ–साथ नए मित्र और मिल

गए।'' इस बार पड़ोस वाली सुनंदा काकी की आवाज थी।

''विहान से कहो यहाँ कॉलोनी के बच्चों के साथ मित्रता कर ले, यहाँ भी बहुत बच्चे हैं।'' चित्रा चाची ने कहा।

''वही तो बहुत कहती हूँ किन्तु कहता है.. क्या मैं उनसे जाकर कहूँगा मेरा कोई मित्र नहीं मुझे मित्र बना लो।''

''अच्छा! तो ये बात है, कोई बात नहीं, आप उससे कहिए कल शाम को उद्यान आ जाएँ, और उद्यान के बीचों–बीच जो रेड बैंच है, बस उस पर जाकर बैठ जाए इतना तो कर सकता है न?'' चित्रा चाची बोलीं।

''अवश्य कहूँगी! बल्कि मैं स्वयं उसे लेकर आऊँगी, किन्तु ये रेड बैंच का क्या चक्कर है?'' माँ ने चौंकते हुए कहा।

''अरे आप उसे लेकर आइये तो... यह एक चमत्कारी बैंच है।''

''अच्छा! ऐसा क्या चमत्कार है भी?'' माँ ने आश्चर्य से पूछा।

''ये तो वहाँ जाने पर ही पता चलेगा।'' चाची हँसते हुए बोलीं– ''दूसरे दिन विहान माँ के साथ उद्यान में गया, उन्होंने देखा उद्यान में बहुत सारे बच्चे खेल रहे हैं, विहान का मन फिर रूआंसा हो गया। वह उद्यान में यहाँ–वहाँ नजर डाल रहा था कि उत्साहित हो बोल पड़ा– ''माँ! वो रही रेड बैंच!'' देखा कि उद्यान के बीचों–बीच एक रेड बैंच रखी थी... जो खाली थी। ''किन्तु माँ! यह बैंच तो खाली है।''

''कोई बात नहीं बच्चे, चाची ने कहा है तो कुछ सोचकर ही कहा होगा।'' विहान डरते–डरते उस पर जाकर बैठ गया। अभी उसे बैठे ५ मिनिट ही हुए थे कि बच्चों का वह समूह उसके पास आ गया और उसका हाथ–पकड़कर उसे अपने साथ खेलने ले गया। देखते ही देखते विहान उन बच्चों में ऐसा

घुल-मिल गया मानो पहले से जानता हो। माँ भी चकित थी, उन्हें अच्छा भी लग रहा था कि उनका बेटा कितना प्रसन्न लग रहा है, उसके कई मित्र बन गए, अब वह अकेला नहीं रहेगा। लेकिन माँ और विहान के मन में अब भी जिज्ञासा थी कि आखिर रेड बैंच का क्या रहस्य है। यह जानने शाम को विहान माँ के साथ चित्रा चाची के घर गया।

''चाची! ये रेड बैंच... क्या है इसके बारे में जानना चाहता हूँ?''

''बच्चे! कैसा रहा इस बैंच पर बैठने का तुम्हारा अनुभव?''

''बहुत अच्छा चाची! मुझे कई मित्र मिल गए, लेकिन मन में यह जानने की इच्छा है कि रेड बैंच पर बैठने का क्या रहस्य है?''

''बात ऐसी है विहान, आज हर व्यक्ति को किसी से पहली बार मिलने में संकोच होता है। इसलिए हमने उद्यान में विशेष रूप से यह रेड बैंच रखी है। इस उद्देश्य से कि बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्री, पुरुष जो भी अपने आपको अकेला अनुभव करें वह आकर इस बैंच पर बैठ जाए। यह संकेत है कि ये व्यक्ति अकेला है इसे मित्रों की आवश्यकता है। देखते ही देखते उनके समूह के लोग उनके पास आ जाएँगे और उन्हें अपने साथ ले जाएँगे। इससे उसे किसी के पास जाने की आवश्यकता भी नहीं होगी और उसका अकेलापन भी दूर हो जाएगा। यह सबकी इच्छा पूरी करती है।''

''वाह चाची! यह तो बहुत अच्छी सूझ है।'' विहान बहुत प्रसन्न था।

''तो क्या कहते हो विहान, है न चमत्कारी रेड बैंच?''

''वाकई चाची! मैं अपने उन मित्रों को भी बताऊँगा कि वे भी अपनी कॉलोनी के उद्यानों में ऐसी एक रेड बैंच अवश्य रखें। ताकि कोई अकेला न रहे।''

''अवश्य बताना बेटा!'' चित्रा चाची मुस्कुराते हुए बोलीं।

''धन्यवाद चित्रा बहन! आपके कारण विहान के चेहरे पर प्रसन्नता दिखाई दी।'' कहते हुए दोनों ने चित्रा चाची से विदा ली।

– भोपाल (म. प्र.)

समुद्र मंथन

कुंभ पर्व समुद्र मंथन के पौराणिक आख्यान से सम्बद्ध है। देव और असुरों ने अमृत प्राप्ति की कामना से मन्दराचल को मथानी और नागराज वासुकी को रस्सी बनाकर क्षीरसागर में समस्त औषधियाँ डालकर मंथन किया। तब उसमें से हलाहल विष, पारिजात वृक्ष, चन्द्रमा, देवी लक्ष्मी, कौस्तुभमणि, वारुणी, भगवान धन्वन्तरि, रम्भा आदि अप्सराएँ, उच्चैश्रवा घोड़ा, ऐरावत हाथी, शार्ङ्ग धनुष, पाञ्चजन्य शंख, कामधेनु और अमृत। इन्हें स्मरण रखने के लिए एक श्लोक भी प्रसिद्ध है जिसमें चौदह रत्नों के नाम बताए गए हैं–

लक्ष्मी: कौस्तुभ पारिजातक सुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा:।
गाव: कामदुहा सुरेश्वरगजो रम्भादि देवांगना।
अश्व: सप्तमुखो विषं हरिधनु: शंखोमृतं चाम्बुधै:
रत्नानीह चतुर्दशं प्रतिदिनं कुर्यात् सदा मंगलम्।।

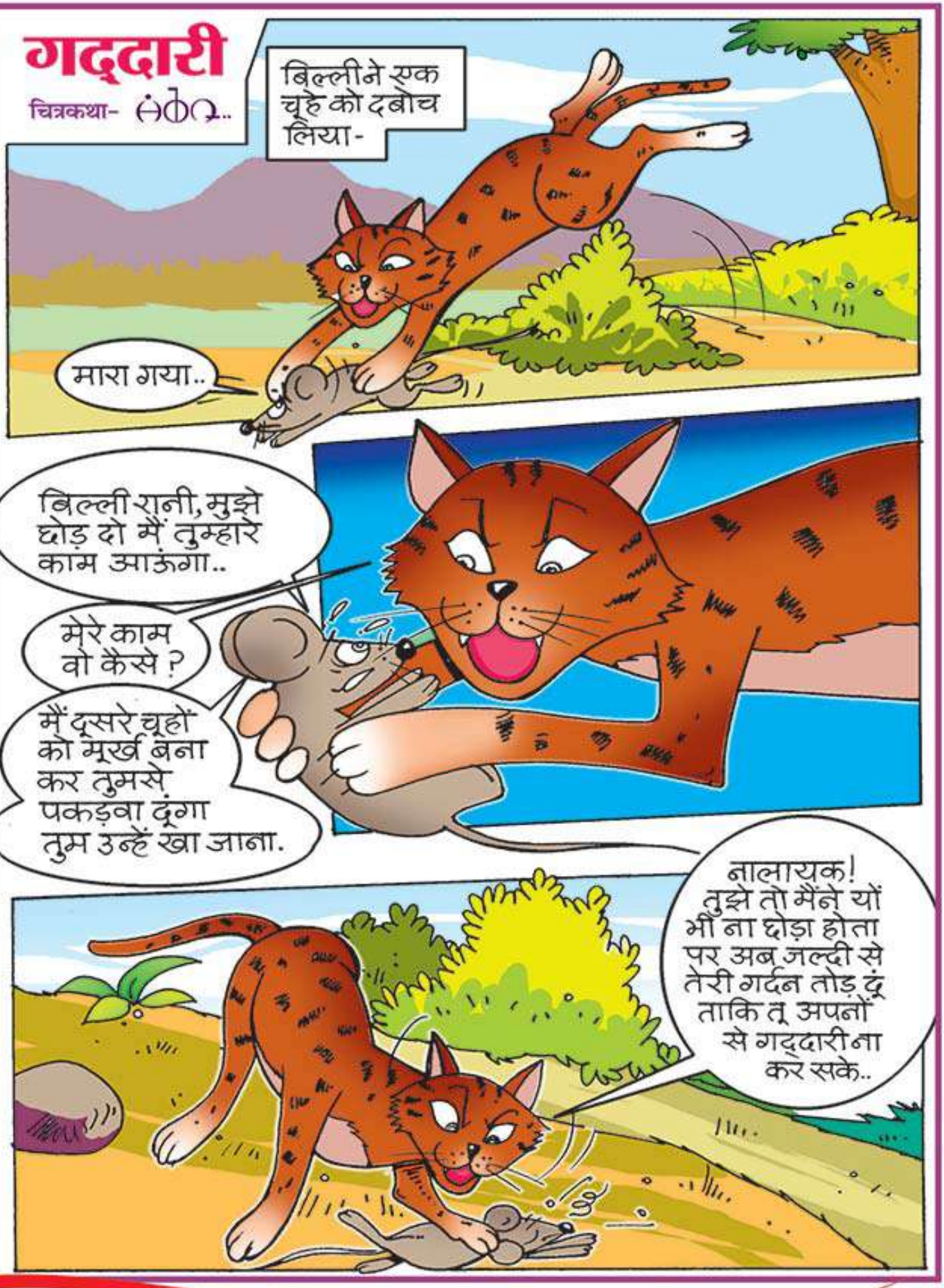

गद्दारी

चित्रकथा- हरीश..

जन जन देशभक्त

– गरिमा जोशी पंत

''छोटू वो टेबल साफ कर। जल्दी, मस्त कपड़ा मार और पानी का जग रख वहाँ। गिलास चमका के रखना।''

जैसलमेर के उस सुनसान रेगिस्तानी दोपहर को कीकर बबूल के कुछ पेड़ों के झुरमुटों से सटे और एकमात्र खेजड़ी वृक्ष की छाया में इस ढाबे में पंखा धीमी चाल से चल रहा था। वास्तव में पंखा धीमी चाल से नहीं चल रहा था बल्कि गर्मी की तेजी इतनी थी कि पंखा उससे होड़ नहीं कर पा रहा था। धूप बड़ी निर्लज्जता से अपनी टाँगें पसार ढाबे में घुसी चली आ रही थी।

वो पाँचों भीतर घुसे। आँखों पर काले चश्मे थे। उनके चेहरों की रुक्षता गरम लू के थपेड़ों से होड़ कर रही थी। उनमें से दो आदमियों ने कंधे पर एक–एक बड़ा काला बैग टांग रखा था। देखने में बैग भारी दिखाई पड़ते थे।

''चल शाबाश बेटा। जल्दी कर।'' संकेत के साथ राधेश्यामजी ने सामान्य से थोड़ी ऊँची आवाज में छोटू को ढाबे के अंतिम छोर पर लगी टेबल को साफ करने को कहा।

उन पाँचों ने चश्में उतार कमीज की जेब में डाल लिए।

''छोटू सिर हिला कंधे पर टंगा गमछा निकाल टेबल साफ करने लगा। टेबल पर बैठे दो कद्दावर और भारी भरकम शरीर वाले और तीन सामान्य कद काठी के ग्राहक चुप हो छोटू को घूर कर देखने लगे। उसके दुबले हाथ टेबल साफ करते हुए काँप रहे थे।

टेबल साफ कर वह पानी लाने को मुड़ा।

पानी का भरा हुआ जग रखते हुए उसके हाथ और काँपे। कुछ पानी टेबल पर छलक गया। ग्राहकों की दृष्टि छोटे से छोटू को बींधने लगी। उनकी धीमे स्वरों में चलने वाली बातों पर एक बार फिर विराम लग गया। छोटू का मुख डर से पीला पड़ गया।

ग्राहकों में से एक उठकर हाथ दिखाता हुआ गुस्से से बोल पड़ा– ''तमीज नहीं है क्या? दूँ एक खींच के?''

पीले सूखे पत्ते की भाँति छोटू का पूरा शरीर थर–थर काँप रहा था। आँखें भर आई थीं। लगता था अभी गिर पड़ेगा। ढाबे के मालिक राधेश्याम जी लचकते हुए आए। ढाबे पर काम करने वाले बाकी दो लड़के प्रकाश और बादल भी काम करते–करते रुक गए।

''अरे, जाने दीजिए सा'ब।'' बच्चा है, अनाथ है बेचारा। गूंगा है। सुनाई भी बहुत कम पड़ता है इसे। जाने कौन–सी अशुभ घड़ी में इस पर तरस खा ले आया यहाँ। अभागा मेरे ही गले ही हड्डी बन गया है।'' कहते हुए राधेश्याम जी ने छोटू को अलग किया। फिर स्वयं टेबल पर गिरा पानी साफ करने लगे।

लचकती हुई चाल से फिर से काउंटर की ओर

जाते हुए बड़बड़ाते रहे– ''भलाई का जमाना नहीं रहा। दया क्या की, समस्या मोल ले ली।'' फिर मुड़ कर बोले– ''सा'ब लोग क्या खाएँगे ? वैसे हमारे यहाँ का बन ऑमलेट बहुत फेमस है। या चिकन दो प्याजा लेंगे रूमाली रोटी के साथ ?''

''बन ऑमलेट ला दो चार प्लेट और सोडा ला देना।''

''बादल, प्रकाश चार प्लेट बन ऑमलेट। जल्दी!''

राधेश्याम ने दोनों लड़कों को आदेश दिया।

आँख तरेरते हुए एक निगाह राधेश्याम जी ने छोटू पर डाली। ''संकेत करते हुए बोले, खड़ा क्या है, नालायक। चल बैठ जा कोने में। उसी के लायक है तू। काम का न काज का।''

छोटू मरियल सा चलता एक ओर बैठ गया। उसने अपना चेहरा दोनों घुटनों के बीच मटमैले फटे कुर्ते में छुपा लिया। ग्राहक फिर अपनी खुसुर–फुसुर में लग गए।

ऑमलेट और सोडा लिए बादल और प्रकाश

साब लोगों की टेबल पर प्लेटें लगाते हुए हँसते हुए छोटू की खिल्ली उड़ाते हुए साहब लोगों को सलाम ठोककर एक कोने में जा बैठ गए। जेब से एक बन निकाला और खाने लगे।

छोटू क्षुधा कातर दृष्टि से उन्हें देखने लगा। दोनों लड़के संकेत कर पूछने लगे– ''खाएगा ?''

छोटू की निस्तेज आँखों में क्षणभर को एक चमक आ गई।

''तो पहले टॉमी बन।'' बादल ने संकेत से हाथ को हिलाते हुए कहा।

छोटू अपने हाथों को आगे टिका, घुटनों के बल आ गया। जीभ बाहर निकाल के एक पैर थोड़ा ऊँचा उठा उसे दाएँ, बाएँ हिलाने लगा।

बादल और प्रकाश कुटिलता से हँसने लगे।

एक टुकड़ा बन छोटू की ओर फेंकते हुए बोले– ''ले मरियल पिल्ले! ले खा ले।''

लपक के छोटू ने बन का छोटा कुतरा हुआ–सा टुकड़ा लपक लिया। प्रकाश और बादल खूब हँसे।

और टुकड़ों की आस में छोटू फिर से पैर की पूँछ बना उसे हिलाने लगा। बादल और प्रकाश उसे बन के टुकड़ों के लिए छकाते रहे। हँसी उड़ाते रहे उसकी। टेबल पर बैठे पाँचों आदमी भी आधी हिंदी, आधी अँग्रेजी की कटी–फटी खुसुर–फुसुर के बीच बेचारे छोटू पर हँसते रहे। काउंटर पर एक जेब वाली गंजी और पजामे में बैंठे ढाबा मालिक राधेश्याम झपकी ले रहे थे। बीच–बीच में उनकी नाक सीटी भी बजा रही थी।

बीच–बीच में प्रकाश और बादल की निर्लज्ज हँसी उन्हें जगा देती। वे चिढ़ जाते।

खा–पी के पाँचों आदमी चलने को तैयार हुए।

बादल को बुला उन्होंने खाने का बिल भरा और दस–दस रुपए की बख्शीश दोनों को दे दी। लड़के प्रसन्न हो गए।

बैग उठा पाँचों आदमी चले गए।

अगली सुबह छोटा करियर ट्रक ढाबे के बाहर रुका। ट्रक ड्राइवर गार्गी खन्ना बाहर निकली। राधेश्याम जी आद सफेद टी-शर्ट, जींस, धूप के काले चश्मे और स्पोर्ट्स शूज में अलग ही शान में थे। अखबार से मुँह उठा उन्होंने ऊपर देखा। गार्गी को देखते ही वे चहक के बोले- ''ओह हो गार्गी!! आओ!! आज का अखबार पढ़ा? पाँचों के पाँचों पकड़े गए। ब्लडी ट्रेटर्स (देशद्रोही)। दे वेयर वेरी डेंजरस् यू नो (जानती हो, बहुत खतरनाक थे वे।) गिरफ्तारी के बाद भी पुलिस एंड बॉर्डर फोर्सेस पर हमला कर भागने की ताक में थे। इसी के चलते मारे गए देशद्रोही।

उनके बैग्स में हथियारों का पूरा जखीरा बरामद हुआ है। पड़ोसी देश के साथ मिलकर हमारे देश में खतरनाक मिशन को अंजाम देने वाले थे। पर वो हमारी ताकत नहीं जानते। हमारे देश का तो बच्चा-बच्चा देश से प्यार करता है। उसके लिए वह कुछ भी कर सकता है।''

''जी सर! मैंने पढ़ा।'' ऐसा कहते हुए गार्गी की आँखें गर्व से चमक उठीं।

''इसमें सनी का बड़ा योगदान है। माय गॉड, ही इज ए जीनियस (हे भगवान वह बहुत ही प्रतिभाशाली बच्चा है।) उसने जो गूंगे, कमजोर बच्चे का अभिनय कर जो सूचना उन आतंकवादियों से निकाली, वह बेजोड़ है।'' दरवाजे की ओर देखते हुए राधेश्याम जी ने मुस्कुराते हुए कहा।

''माँ'' सनी उर्फ छोटू दौड़ता हुआ आया। नीले हाफ पैंट और पीली टी-शर्ट में सुनहरे बालों वाले इस चंचल लड़के को देखकर कौन कह सकता था कि यह वह बच्चा है जो कल तक अपना आत्म-सम्मान दांव पर लगा कुत्ता बन, बन के टुकड़े लपक रहा था और वह भी देशप्रेम के लिए। उसने ही अपने तेज कानों को उन दुर्दांत आतंककारियों के मंसूबे समझने के लिए लगा रखा था। कई पेशेवर मंझे हुए अभिनेता उसकी इस प्रतिभा के आगे नतमस्तक हो जाते। गार्गी ने सनी को गले से लगा लिया। ''हाउ वाज थे एडवेंचर माय सन? (एडवेंचर कैसा रहा मेरे बच्चे?''

''अमेजिंग (अद्भुत)।'' सनी ने चहकते हुए कहा। ''गार्गी! जिस देश में माँएँ तुम्हारी जैसी हों, उस देश का कोई क्या बाल बाँका करेगा।''

पति सीमा पर तैनात है और तुमने कैसी निडरता से अपने इकलौते बेटे को इस एडवेंचर के लिए भेज दिया। जानते हुए भी कि कितना खतरनाक था ये। पर न तुम डरी ना तुम्हारा बालवीर। और ये पूरी स्क्रिप्ट तुम्हारे बेटे ने लिख हम सबको निर्देशित कर अपना रोल क्या बखूबी अदा किया। हीरो बच्चा।''

''अब क्या आदेश है शेरनी? कहाँ चलना है?''

''ट्रक तैयार है सर! चलिए एक-दूसरे एडवेंचर पर चलते हैं। अब किसी और देशद्रोही टोली का पर्दा गिराने। बाकी बातें ट्रक में होंगी।''

गार्गी यह कहकर खिलखिला के हँस पड़ी।

साथ में राधेश्याम जी भी जो असल में रिटायर्ड कर्नल पांडे थे। युद्ध में एक पैर गँवा चुके थे। लचक के चलते थे पर हौंसले थे फौलाद। साथ में थे रोनित और तनिष्क यानी कि इस नाटक के प्रकाश और बादल। और इन जोशीले नौजवानों की आँखें एक और एडवेंचर के नाम से ही चमक उठी थीं। सनी को गोद में उठा वे भागकर ट्रक में बैठ गए।

गार्गी खन्ना ने कर्नल पांडे को देखा। उनकी स्वीकृति पा ट्रक स्टार्ट कर दिया। ट्रक न रफ्तार पकड़ ली मोटर की आवाज हवा की आवाज से मिल जैसे कह रही थी, ''संभल के नजर उठाना ओ देश के दुश्मनों, हमारे देश का हर बच्चा, हर माँ, हर बुजुर्ग और हर जवान एक वीर सपूत है।''

जय हिंद!

- इन्दौर (म. प्र.)

जरा बताओ तो...

1

शरीर का तापमान 98.4 डिग्री फारेनहाइट होता है. अगर इसे सेल्सियस में मापें तो यह कितना होता है ?

2

सौर मंडल में क्रमवार चलें तो पृथ्वी कौनसे नम्बर पर सूर्य की परिक्रमा कर रही है?

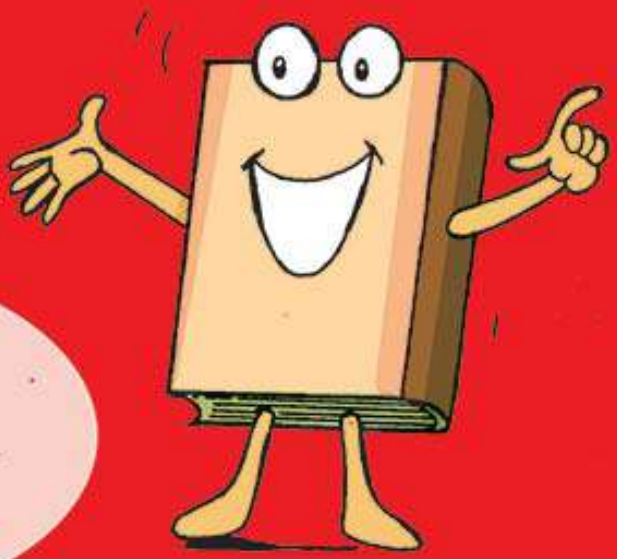

3

अंग्रेजी भाषा में जिस पुस्तक को डिक्शनरी कहते हैं. उस पुस्तक को हिन्दी भाषा में क्या कहते है?

प्रस्तुति-संकेत गोस्वामी

सही उत्तर- 1. 36.88 डिग्री सेल्सियस 2. तीसरे नम्बर पर 3. शब्दकोश

स्वच्छ गुड़ की मिठास

– संजीव जायसवाल 'संजय'

पात्र–

१) धर्मा हाथी।
२) हेमू खरगोश।
३) भालू दादा।
४) पिंकी हिरण।
५) कालू लंगूर।
६) लंबू ऊंट।

प्रथम दृश्य

धर्मा का गुड़ बनाने का कोल्हू

(मंच पर एक बड़े से जंगल का दृश्य। कोल्हू का सेटअप, उसके पास गन्नों का ढेर और गुड़ बनाने के लिए बड़े–बड़े बर्तन हैं। धर्मा हाथी सूँड से गन्नों को कोल्हू में डाल रहा है। गन्ने का रस एक ओर से बह कर बड़े से बर्तन में जा रहा है। सामने एक भट्ठी पर चढ़े दूसरे बर्तन में रस उबल रहा है।)

धर्मा– (गन्नों को कोल्हू में डालते हुए, प्रसन्न होकर) इस बार गन्ने की उपज बहुत अच्छी हुई है। सारे गन्ने मीठे–मीठे और रसीले हैं इससे गुड़ का स्वाद और भी बढ़ जाएगा।

(हेमू खरगोश धीरे–धीरे मंच पर आता है और गन्नों को ध्यानपूर्वक देखकर धर्मा की ओर देखता है।)

हेमू– (चिंता भरे स्वर में) अरे! यह क्या दादा? आप गन्नों को धोए बिना ही कोल्हू में डाल रहे हैं। इससे गंदगी रस में मिल जाएगी और उससे कई प्रकार की बीमारियाँ फैल सकती हैं।

धर्मा– (हँसते हुए) हेमू, उधर देखो, गन्ने का रस भट्टी में उबाला जा रहा है। इससे अधिकांश गंदगी नष्ट हो जाएगी।

हेमू– (सहमति से, लेकिन चिंतित) आपकी बात सही है, लेकिन थोड़ी बहुत गंदगी तब भी रह जाएगी। बीमारियों के लिए उतनी गंदगी भी काफी है। मैं तो अपने खेत की गाजरों को रगड़–रगड़ कर धोता हूँ फिर किसी को खाने को देता हूँ। क्योंकि मिट्टी में कई प्रकार के बैक्टीरिया और कीड़े होते हैं। इसलिए हर चीज की अच्छी तरह से सफाई आवश्यक है। सरकार भी कहती है कि 'स्वच्छ भारत–स्वस्थ भारत' और आप इस तरह...

धर्मा– (विचार में डूबे हुए) तुम्हारी बात सही है लेकिन में इतने सारे गन्नों को कैसे साफ कर पाऊँगा? गाजरें तो थोड़ी ही होती हैं, लेकिन गन्ने बहुत हैं।

हेमू– (मुस्कराते हुए) अरे दादा! गन्नों को फव्वारे से साफ कर लीजिए।

धर्मा– (हैरान होकर) फव्वारा यहाँ कहाँ है?

अगर मंगवाऊँगा तो बहुत खर्चा होगा। मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं।

हेमू– (हँसते हुए) अगर मैं फव्वारा नि:शुल्क मैं मंगवा दूँ तो ?

धर्मा– तो तुम्हें मुँह माँगा ईनाम दूँगा।

हेमू– नहीं–नहीं उसकी आवश्यकता नहीं है (वह पास में बह रही नदी की ओर संकेत करता है।) और आपको भी फव्वारा कहीं से मँगवाने की आवश्यकता नहीं है। अपनी सूँड में नदी से पानी भर लीजिए और गन्नों पर तेज धार छोड़ दीजिए। यह फव्वारे से भी अधिक जोरदार होगा।

धर्मा– (खुशी से ठहाके लगाते हुए) वाह! यह तो बहुत आसान है। मैंने इस बारे में कभी सोचा ही नहीं था। तुम बहुत बुद्धिमान हो, आओ तुम्हारी पीठ ठोंक दूँ।

हेमू– (घबराकर पीछे हटते हुए) न बाबा न,

अगर आपने मेरी पीठ ठोंक दी तो मैं तो बिलकुल ठुक ही जाऊँगा।

धर्मा– (हँसते हुए) घबराओ मत, तुम बहुत प्यारे हो इसलिए मैं तुमसे मजाक कर रहा था।

(इतना कह धर्मा तेजी से नदी की ओर बढ़ता है, अपनी सूँड में पानी भर लाता है और गन्नों पर तेज धार छोड़ता है। थोड़ी ही देर में सारे गन्ने धुल कर साफ हो जाते हैं।)

धर्मा– (प्रसन्न होकर) हेमू, भाई! मजा आ गया देखना अब बहुत स्वादिष्ट गुड़ बनेगा।

हेमू– (उत्साहित स्वर में) सही कह रहे हैं दादा! अब आप हमेशा साफ गन्नों से ही गुड़ बनाइयेगा।

(इतना कहकर हेमू चला जाता है।)

द्वितीय दृश्य

भालू दादा का आगमन

(मंच पर धर्मा का कोल्हू और साफ गन्नों का ढेर। भालू दादा बहुत इत्मिनान से धीरे–धीरे वहाँ आते हैं।)

भालू दादा– (उत्सुकता से) धर्मा! मैंने सुना है कि तुमने गन्नों को धोकर गुड़ बनाया है।

धर्मा– बिलकुल चकाचक साफ करके बनाया है और जानते हैं यह तरकीब मुझे हेमू ने बतायी है।

भालू दादा– वह बहुत भला लड़का है, सबकी सहायता करता रहता है। (सिर हिलाते हुए) चलो अब एक गुड़ की भेली मुझे दे दो।

धर्मा– दादा! आज तो भेली आपको नहीं मिल पाएगी।

भालू दादा– (आश्चर्य से) क्यों ?

धर्मा– (निश्चित स्वर में) क्षमा करें दादा! आज पहले भेली हेमू को मिलेगी। उसके बाद जो गुड़ बचेगा, वह बेचा नहीं जाएगा।

भालू दादा– (आश्चर्य चकित) ऐसा क्यों ?

धर्मा– (मुस्कुराते हुए) क्योंकि हेमू ने हमें गन्ने धोने का सही तरीका बताया है। इसलिए पहली भेली उसे भेंट करूँगा। उसके बाद जो गुड़ बचेगा उसे मैं जंगल के सभी जानवरों को बाँट कर उन्हें साफ गुड़ का स्वाद चखाना चाहता हूँ।

भालू दादा– (हँसते हुए) अरे वाह! यह तो बहुत अच्छी बात है। लेकिन, कल का सारा गुड़ मेरा होगा। मेरे पोते का जन्मदिन है, जिसमें सभी को शहद और गुड़ की दावत दूँगा।

धर्मा– (मुस्कुराते हुए) ठीक है, दादा! आपकी बात सिर आँखों पर।

(भालू दादा प्रसन्न मुद्रा में चले जाते हैं, धर्मा उस दिन का गुड़ जंगल में बाँट देता है। सभी जानवरों को गुड़ बहुत पसंद आता है।)

तृतीय दृश्य

जंगल में चर्चा

(बरगद के पेड़ की नीचे कई जानवर जमा हैं और गपशप कर रहे हैं।)

पिंकी हिरण– (प्रसन्न मुद्रा में) भाई! कुछ भी कहो, धर्मा ने कल जो गुड़ खिलाया था उसका स्वाद बिलकुल अलग था।

कालू लंगूर– (सिर हिलाते हुए) सही कह रहे हो, ऐसा स्वादिष्ट गुड़ मैंने पहले कभी नहीं खाया। सुना है कि धर्मा बहुत परिश्रम से पहले गन्नों को धोकर साफ करता है फिर गुड़ बनाता है।

लंबू ऊँट– वह हम लोगों के स्वास्थ्य की कितनी चिंता करता है। यदि बाकी लोग भी साफ-सफाई का इतना ध्यान रखने लगें तो जंगल से आधी बीमारियाँ दूर हों जाएँगी।

मीनू उदबिलाव– बिलकुल सही बात (सिर हिलाते हुए) मैं तो अब हमेशा धर्मा के यहाँ से ही गुड़ खरीदा करूँगी अपने बच्चों के लिए गंदे स्थान पर बिकने वाली वस्तुएँ कभी नहीं खरीदूँगी।

बाकी जानवर– (एक स्वर में) हम भी यही करेंगे।

चतुर्थ दृश्य

धर्मा की धूम

(धर्मा के कोल्हू पर ग्राहकों की भीड़ लगी है। वह प्रसन्न मुद्रा में सभी को गुड़ तौल कर दे रहा है। उसके पीछे एक बोर्ड लगा है जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है 'स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत' उसके नीचे मुस्कुराते हुए हेमू खरगोश का चित्र बना है।)

कालू लंगूर– धर्मा भाई! जल्दी से पाँच किलो गुड़ मुझे भी तौल दो, कहीं समाप्त न हो जाए।

मीनू उदबिलाव– (उतावली होते हुए) मुझे भी जल्दी से दे दो। मैं बच्चों को स्वादिष्ट गुड़ खिलाने का वादा करके आई हूँ। यदि गुड़ समाप्त हो गया तो वे बहुत रोयेंगे।

धर्मा– (हँसते हुए) चिंता मत करो, सबको गुड़ मिलेगा, मैं शीघ्र ही दूसरा कोल्हू लगवा रहा हूँ।

लंबू ऊँट– अरे वाह! यह तो बहुत ही अच्छी बात है। (कुछ सोचते हुए) लेकिन तुमने यह हेमू की फोटो अपने यहाँ क्यों लगाई है?

धर्मा– (मुस्कुराते हुए) ये हमारे 'स्वच्छता दूत' हैं। इन्होंने ही मुझे स्वच्छता का महत्व समझाया है।

लंबू ऊँट– (अन्य जानवरों की ओर देखते हुए) भाई! कुछ भी कहो, अपना हेमू है कमाल का जीव, गाजरों को ऐसा रगड़-रगड़ कर साफ करता है जैसे अपने बच्चे को नहला रहा हो।

कालू लंगूर– तभी उसकी दुकान का गाजर का हलुआ पूरे जंगल में प्रसिद्ध है। सभी अँगुलियाँ चाट-चाटकर खाते हैं। देखना अब धर्मा भाई का भी गुड़ पूरे जंगल में प्रसिद्ध हो जाएगा और इनकी बिक्री में चार चाँद लग जायेंगे।

(सभी जानवर सहमति में सिर हिलाते हैं।)

– लखनऊ (उ. प्र.)

मय दानव द्वारा सभा–भवन का निर्माण

– मोहनलाल जोशी

खाण्डव वन में श्रीकृष्ण और अर्जुन ने मय दानव को बचाया। मय दानव बहुत बड़ा भवन निर्माता था। उसने राक्षसों के अनेक नगर बनाये थे। बड़े–बड़े महल बनाये थे। विलक्षण सभा–भवन बनाये थे। वह सुन्दर बावड़ियाँ तथा पोखर बनाना जानता था।

मय दानव कुन्तीनन्दन से बोला– ''आपने मुझे जीवनदान दिया है। मैं आपको क्या भेंट करूँ?'' अर्जुन ने कहा– ''मैं बदले में कुछ नहीं लेता।''

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा– ''युधिष्ठिर जी के लिए एक सभा–भवन बना दो। हम यही भेंट मान लेंगे।''

मयासुर ने सभा–भवन बनाना प्रारंभ किया। उसने एक गदा और शंख लाकर अर्जुन को दिए। सभा भवन के द्वार पर किंकर बैठे थे। वे सभा भवन की रक्षा करते थे। सभा भवन सैकड़ों योजन लम्बा–चौड़ा था। उसमें अनेक महल पोखरियाँ, बगीचे आदि थे। पृथ्वी लोक पर ऐसा कोई दूसरा सभा भवन नहीं था।

युधिष्ठिर जी ने गृह प्रवेश का अच्छा मुहूर्त देखा। फिर भाइयों सहित दिव्य सभा भवन में प्रवेश किया। वे माता कुन्ती और द्रौपदी सहित वहाँ आनन्द से रहने लगे। एक दिन नारद ऋषि आये। पाण्डवों ने उनकी उचित पूजा अर्चना की। उनको आसन पर बैठाया। नारद जी ने युधिष्ठिर को राजनीति के उपदेश दिये। उन्होंने अनेक दिव्य सभाओं की बातें बतायी। ब्रह्माजी की सभा, इन्द्र की सभा, वरुण की सभा, धर्मराज की सभा आदि का वर्णन किया। पृथ्वी लोक में युधिष्ठिर जी की सभा जैसी और कोई नहीं थी।

नारद जी ने युधिष्ठिर को उनके पिता पाण्डु का संदेश भी दिया। उन्होंने कहा– ''आपके पिताजी की इच्छा है आप राजसूय यज्ञ करो। यज्ञ के प्रभाव से वे दिव्य सभाओं में सम्मानित होंगे।''

युधिष्ठिर जी ने राजसूय यज्ञ करने का निश्चय किया और यज्ञ की तैयारी आरंभ कर दी।

– बाड़मेर (राजस्थान)

कहानी – १२ जनवरी : विवेकानंद जयंती

अनेक छबियों के स्वामी

– डॉ. सेवा नंदवाल

अभिवादन के आदान–प्रदान के उपरांत जैसे ही भार्गवी दीदी पढ़ाने को तत्पर हुईं जयश्री ने टोकते, सकुचाते हुए अनुरोध कर दिया– ''दीदी! आज धूप में ले चलिए वहीं पढ़ाई करेंगे।''

''क्यों?'' भार्गवी दीदी ने अंजान बनते हुए पूछ लिया। ''दीदी! आज ठंड अधिक है।'' अपनी सहपाठी के समर्थन में दाँत किटकिटाते हुए उत्तम ने सुर में सुर मिलाते हुए कहा। मानो, प्रमाण भी प्रस्तुत कर दिया। उत्तम कक्षा का सबसे उत्तम अभिनेता था।

भार्गवी मुस्करा पड़ी। वे विद्यार्थियों के आए दिन हथकंडों से अच्छी तरह परिचित थी। इसलिए पूछ लिया– ''क्या सचमुच?'' इतना कहकर उन्होंने आश्वस्त होने के लिए एक उड़ती दृष्टि बच्चों पर डाली। सबके चेहरों पर वही अनुरोध अंकित था लेकिन उनमें से एक विद्यार्थी सबके मंतव्य को झुठला रहा था। वह ना गर्म कपड़े पहने था ना उसे उसके मुख पर ठंड को लेकर कोई सिकुड़न थी।

दीदी की दृष्टि उस पर स्थिर देखा कक्षा की अनेक जोड़ी आँखें उसी विद्यार्थी पर केन्द्रित हो गई। दीदी ने मुस्कुराते हुए उस विद्यार्थी से पूछ लिया– ''अमोल! आज ठंड है क्या?'' अमोल ने कंधे उचकाते हुए मना किया। विशाखा को बात पची नहीं तो उसने पूछ लिया– ''दीदी! ऐसा कैसे हो सकता है? ठंड के कारण सब बच्चे गरम कपड़े पहनकर आए हैं, आप भी पहने हैं... फिर इसे क्यों नहीं लग रही? क्या यह वज्र का बना है?'' प्रश्न ठीक था इसलिए दीदी ने भी समर्थन कर दिया– ''हाँ, उत्तर दो अनमोल?''

''दीदी! मेरे दादाजी कहते हैं, किसी भी वस्तु का संबंध हमारे मन–मस्तिष्क से होता है। यदि हमारा मन स्वीकार लेता है कि ठंड है तो ठंड अवश्य लगेगी अन्यथा नहीं।'' अमोल ने कारण बताया। ''याद आया, याद आया। ऐसा ही अनमोल वचन किसी ने वर्षों पहले कहा था।'' भार्गवी बोली। ''क्या वचन था?'' मकरंद ने पूछा। ''किसने कहा था?'' वल्लवी ने साथ में जोड़ दिया।

उन्होंने कहा था... ''ठंड का अपना अस्तित्व नहीं होता वह ऊष्मा की अनुपस्थिति हैं।'' भार्गवी दीदी ने बताया। ''मतलब?'' विम्मी ने पूछा।

''अर्थात् जहाँ ऊष्मा याने गर्मी की अनुपस्थिति या अभाव होता है वहीं ठंड का अनुभव होता है यानि धूप का प्रभाव ठंड को परास्त कर देता है।'' भार्गवी ने समझाया। ''दीदी! यह अनमोल वाणी किसने कही थीं?'' परिमल ने सहपाठी के प्रश्न को दोहरा दिया। ''यह कहा था युवाओं के सबसे बड़े आइकॉन, आदर्श पुरुष ने।'' दीदी! ने रहस्यात्मक ढंग से कहा।

''दीदी! उनका नाम?'' मीना ने जिज्ञासा दर्शाई। ''वे एक प्रेरणास्रोत और आदर्श थे।'' दीदी भार्गवी ने रहस्य बरकरार रखते हुए कहा। ''हम समझ नहीं पा रहे दीदी?'' नरेश बोला।

''वे अनगिनत छबियों से जुड़े थे।'' भार्गवी ने रहस्य यथावत रखा तो मधु ने टोक दिया। ''जैसे?''

''जैसे वे एक अच्छे प्रबंधन गुरु, आध्यात्मिक गुरु, वेदांतों का भाष्य करने वाले, धार्मिकता और आधुनिकता को साधने वाले, कट्टर देश प्रेमी, कुशल संगठक, आदर्श शिष्य... ऐसी न जाने कितनी छबियों से संलग्न थे।'' भार्गवी ने मुस्कुराते हुए कहा।

''दीदी! कुछ पल्ले नहीं पड़ रहा आप किसके बारे में बोल रही हैं?'' केवल ने खिसियाते कहा।

''और बताऊँ... वे वेदांत के सदाचरण, अध्यात्म के अवतरण, व साहस के चिर संस्करण, कर्मयोग के जागरण, युवाओं के अनुकरण तथा धर्म और लोक के समीकरण थे। वे थ्री इन वन थे याने

संत, गुरु और संन्यासी। इन तीनों स्वरूपों में उन्होंने समाज की समयानुकूल, जाग्रत, शिक्षित और संतुलित किया।'' भार्गवी दीदी अपनी शैली में कहे जा रही थीं। ''दीदी! अवश्य वे महान विभूति रहे होंगे पर हमारी उत्सुकता अभी तक शेष है कि आखिर वे थे कौन?'' स्नेहा ने पूछा।

''जब से वही तो बताने का प्रयत्न कर रही हूँ। कुछ और संकेत दूँ? उन्होंने जो कुछ लिखा वह साहित्य, सृजन का पारावार है जिसमें लोक-कल्याण की तरंगें, प्रवहमान हैं। उनकी देशभक्ति व्यावहारिक है जो केवल, देशप्रेम की भावना तक सीमित नहीं बल्कि उसका अर्थ है देशवासियों की सेवा का उन्माद....'' भार्गवी दीदी बता रही थी कि विपुल ने टोक दिया- ''दीदी! फिर भी उनका नाम ध्यान में नहीं आ रहा।''

''तो और सुनो तब शायद याद आ जाए। वे महान संत, गरीबों के सेवक, दूरदर्शी और रचनात्मक समाज सुधारक, उत्साही मार्गदर्शक, धार्मिक कर्मकांड और रूढ़ियों के धुरविरोधी तथा भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा थे। इतने सारे संकेत सूत्र मैंने बता दिए, अब नाम पहचानने में क्या कठिनाई है?'' दीदी ने उकसाया।

विद्यार्थियों की असमंजस स्थिति यथावत रही। ''अरे! हाँ उन्होंने अपने अनमोल वचन में आगे यह भी कहा था कि.... अंधकार का अपना अस्तित्व नहीं होता वह केवल प्रकाश की अनुपस्थिति होती है। इस बात का तात्पर्य बताओगे।'' भार्गवी दीदी ने प्रोत्साहित किया।

''जी दीदी! इस कथन का तात्पर्य यह है कि घनघोर अंधकार के घमण्ड को ध्वस्त करने के लिए प्रकाश की एक किरण पर्याप्त है, मतलब प्रकाश की अनुपस्थिति का लाभ उठाते हुए अंधकार अपने पैर पसारने का प्रयत्न करता है।'' कुणाल ने बताया।

''उन्होंने तो यह भी कहा था कि शैतान का

अपना अस्तित्व नहीं होता। यह वहीं दादागिरी दिखाता है जहाँ प्रेम, सत्य और ईश्वर की उपस्थिति नहीं होती। क्या अब बता सकते हो उस महान विभूति का नाम?'' भार्गवी ने झकझोरा। विद्यार्थीगण फिर भी यथावत बने रहे। ''तुम तो ऐसे चुप्पी साध गए हो जैसे मैंने कोई कठिन पहेली पूछ ली हो?'' दीदी ने उकसाया।

विद्यार्थीगण विभिन्न भाव-भंगिमा बनाते हुए जैसे दिमाग पर जोर डालने का भरसक प्रयास करने लगे फिर भी कोई आगे नहीं आया। ''अच्छा अब मैं उनका एक लोकप्रिय वचन बताती हूँ जो तुमने अवश्य सुना होगा और उसे सुनकर तुम्हें उनका नाम अवश्य स्मरण हो आएगा।'' मुस्कुराते हुए दीदी बोलीं। विद्यार्थीगण और सजगतापूर्वक बैठ गए।

''उनका वह प्रेरक वचन था- उठो, जागो और लक्ष्य पाने तक मत रुको।'' ''हाँ दीदी! यह तो सुना है।'' अनेक विद्यार्थी एकसाथ बोल पड़े। ''तो फिर अपने विवेक का उपयोग करते हुए आनंदपूर्वक बता दो।'' हँसते हुए दीदी भार्गवी ने कहा।

किसी विद्यार्थी ने धीरे से फुसफुसा दिया- ''स्वामी विवेकानंद।'' फिर क्या था अनेक विद्यार्थी एक स्वर में अलापने लगे- ''स्वामी विवेकानंद, स्वामी विवेकानंद।''

- इन्दौर (म. प्र.)

षडयंत्र को विफल किया

– अरविन्द जवळेकर

अहिल्याबाई के दिवान गंगोबा तात्या ने सुझाव दिया की अहिल्याबाई एक बच्चे को गोद ले ले जिससे उसे सूभेदार बनाया जा सके। उनका इरादा अहिल्याबाई के हाथ से सत्ता हथीयाना था। अहिल्याबाई ने उनकी इस चाल को भाँप लिया और उनके सुझाव को नकार दिया। गंगोबा ने अपनी चाल को असफल होते देख पेशवा के भाई राघोबा दादा के साथ मिलकर षडयंत्र किया और उन्हें अहिल्याबाई पर आक्रमण करने का निमंत्रण दिया।

अहिल्याबाई के जासूसों ने उन्हें इस षड़यंत्र की जानकारी दे दी। वे सावधान हो गईं। उन्होंने तत्काल अपने आसपास के राज्यों के अपने मित्र शासकों को पत्र लिखकर अपनी सहायता के लिए आमंत्रित कर लिया। उन्होंने पुणे के पेशवा को भी पत्र लिखकर उन्हें भी घटनाक्रम से अवगत करा दिया। पेशवा ने भी अहिल्याबाई को लिख दिया कि यदि आपके राज्य पर कोई आक्रमण करे तो आप बेशक उनका प्रतिकार करें। हम आपके साथ हैं।

इसके बाद अहिल्याबाई ने ५०० स्त्रियों की एक सेना बनाई और उन्हें सैनिक प्रशिक्षण दिया। तब तक इन सारी घटनाओं से अनभिज्ञ राघोबा दादा पेशवा अपनी सेना के साथ उज्जैन में डेरा डाल चुके थे। इसके बाद अहिल्याबाई ने राघोबा दादा को पत्र लिखा– ''हमारे दीवान के कहने पर आप हमारे राज्य को हड़पने के इरादे से यहाँ आए हैं। किन्तु सावधान हम भी आपका मुकाबला करने के लिए तैयार हैं। हमने एक महिला सेना बनाई है जिसे लेकर हम आपसे युद्ध करने को तैयार हैं। यदि आप युद्ध में जीत भी गए तो स्त्रियों की सेना से जीतने पर कोई आपकी प्रशंसा नहीं करेगा। किन्तु यदि आप हार गए तो स्त्रियों से हारने का कलंक आपके माथे पर हमेशा के लिए अंकित हो जायेगा। इसलिए सोच–विचारकर आक्रमण करना।'' राघोबा दादा अहिल्याबाई की इस रणनीति के समक्ष हतबल हो गए। उन्होंने अहिल्याबाई को पत्र लिखा– ''आप हमें गलत समझ रही हैं। हम आपके राज्य को हड़पने के लिए नहीं, आपके पुत्र के निधन पर शोक व्यक्त करने आए हैं।''

इस प्रकार अपने राज्य पर आए संकट को अहिल्या माता ने चतुराई से दूर कर दिया।

राजधानी महेश्वर

पुत्र के देहांत के पश्चात अहिल्या माता सांसारिक मोह माया से विरक्त हो गईं थीं। सब कुछ छोड़कर किसी तीर्थ क्षेत्र में जाकर बसने और अपना शेष जीवन ईश्वर की भक्ति में लगाने की उनकी इच्छा थी। किन्तु अपने ससुर को दिया वचन तथा अपनी प्रजा की चिंता उन्हें ऐसा नहीं करने दे रही थी।

आखिर उन्होंने एक मध्य मार्ग ढूँढ़ निकाला। उन्होंने अपनी राजधानी को नर्मदा नदी के किनारे पर स्थित ऐतिहासिक और पवित्र नगरी महेश्वर ले जाने का निर्णय लिया। जिससे उनके लिए राज्य के संचालन के साथ–साथ स्वयं की आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग भी खुल गया। उन्होंने अपना शेष जीवन महेश्वर में ईश्वर की आराधना करते हुए राज्य संचालन करने में बिताया।

– इन्दौर (म. प्र.)

२६ जनवरी की परेड

चित्रकथा : देवांशु वत्स

मकर संक्रांति

– मधु गोयल

अमेरिका में पाँच वर्ष का समय बिताने के बाद मयंक, विदेश से अपने माता–पिता के साथ कुछ दिन पहले ही अपने देश 'भारत' वापस आया था। 'भारत' आने के बाद उसका पहला त्यौहार मकर संक्रांति पड़ा। इससे पहले मकर संक्रांति पर्व के बारे में कुछ जानता नहीं था। माँ ने भी कभी इस पर्व के बारे में उसे नहीं बताया।

उसने देखा कि सब अपनी–अपनी छतों पर चढ़े हैं और आसमान की ओर सुंदर–सुंदर रंग–बिरंगी पतंगें उड़ रही हैं। हर आयु के लोग, पूरे जोश से मस्ती कर रहे थे। और सभी इधर–उधर इशारा कर हँस रहे थे। और ''वो काटा..... वो काटा....।'' के शोर से छत पर जीवंतता थी।

मयंक ने अपने चचेरे भाई 'आकाश' के हाथ में पतंग और चरखी देखी, वह समझ गया था कि भाई भी पतंग उड़ाने जा रहे हैं, वह भी आकाश के पीछे हो लिया।

मयंक को देख आकाश ने कहा– ''तुम भी आओ मयंक! दोनों मिलकर मस्ती करेंगें, आज तो पतंग उड़ाने का दिन है। ऐसा आनंद यू एस में कहाँ.... मेरे भाई ? अपने देश के मजे ही कुछ और हैं।''

''लेकिन भाई! पतंग और छत पर!! आवासीय क्षेत्र में 'पतंग' उड़ाना ठीक नहीं, इससे तो पक्षियों को नुकसान पहुँच सकता है। अमेरिका में तो 'बीच' में जाकर पतंगें उड़ाई जाती हैं। यहाँ देखो आसपास कितने पक्षी हैं पतंग के मांझे से तो यह घायल हो सकते हैं।''

आकाश ने कहा– ''यह भारत है मेरे भाई! यहाँ तो छतों पर ही पतंगें उड़ाई जाती हैं। जिनके पास अपनी छत नहीं है वह खुले में पतंग उड़ाते हैं, हमारे पास तो अपनी छत हैं... भाई हम तो यही पतंग उड़ाएँगे।''

''कोई पक्षी घायल हो गया तो ?''

''इसमें मैं क्या कर सकता हूँ यदि कोई पक्षी बीच में आ जाएगा तो हो भी सकता है।'' आकाश ने कहा– ''और फिर अमेरिका में छतें होती ही कहाँ हैं ? वहाँ घर इस तरह बने हुए नहीं होते, इसीलिए सब 'बीच' पर जाकर पतंग उड़ाते हैं।'' मयंक चुप हो गया और कहा– ''भाई! आज कोई विशेष बात है क्या ?''

''सभी लोग अपनी–अपनी छतों पर चढ़े हुए हैं। हाँ! आज मकर संक्रांति है, इस दिन पतंगें उड़ाई जाती हैं और सब बहुत मस्ती करते हैं, तुम्हें पतंग उड़ानी आती है ?''

''आती तो है लेकिन, अच्छे से नहीं उड़ा पाता हूँ।'' मयंक 'मकर संक्रांति' के बारे में कुछ समझ नहीं पाया, उसकी माँ अमेरिका में भी समय–समय पर हर त्यौहार की जानकारी मयंक को देती रहती थी।

लेकिन मकर संक्रांति आज पहली बार सुना, माँ ने भी कभी इस त्यौहार के बारे में नहीं बताया।

मयंक का भी पतंग उड़ाने का मनचाहा और कहा– ''भाई! मैं भी प्रयत्न करूँ?''

''वैसे मुझे पतंग उड़ाना अच्छे से नहीं आता है। एक बार की बात है अमेरिका में हम 'बीच' पर गए हुए थे, वहाँ मेरे से बड़े भारतीय बच्चे मेरे मित्र पतंग उड़ा रहे थे, उन्होंने अपनी पतंग की डोर मुझे पकड़ा दी, पतंग की डोर तो मैंने पकड़ ली, लेकिन मुझे तो ऐसा लग रहा था जैसे मैं पतंग के साथ खिंचा चला जा रहा हूँ, मेरे पैर जमीन पर जम नहीं रहे थे। डर के कारण से मैंने पतंग छोड़ दी। मेरे मित्र मेरा चेहरा देख हँसने लगे और कहा– बस निकल गई फूँक।''

मैंने कहा– ''मैं क्या करूँ? मुझे तो ऐसा लग रहा था जैसे मैं पतंग के साथ ही उड़ जाऊँगा।''

''लेकिन भाई! यहाँ पतंगें छोटी हैं, मैं प्रयत्न करता हूँ।''

''हाँ, कर सकते हो लेकिन संभल कर,

पतंगबाजी में एक–दूसरे की पतंग काटने का ही मजा है, जिसने दूसरे की पतंग काट दी वह जीत गया। हवा के प्रवाह से ही पतंग ऊपर नीचे होती है।''

''मैं तो बहुत अनाड़ी हूँ भैया! यदि ऐसा है, तो आप ही सम्हालो अपनी पतंग।''

इतना कह, मयंक पतंग की डोर आकाश को पकड़ा ही रहा था, तो देखा एक कबूतर उससे कुछ ही दूरी पर छत पर आ गिरा। कबूतर को देख मयंक सोचने लगा यह क्या हुआ? ध्यान से देखने पर पता चला उसके पंखों में पतंग का धागा लिपटा हुआ था जिसकी वजह से वह उड़ने में असमर्थ था। मयंक ने कबूतर को उठाने का प्रयत्न किया किन्तु वह डगमग–डगमग इधर–उधर हो रहा था।

मयंक ने एक रूमाल से ढँक कर उसको पकड़ा और हाथ में थाम कर धीरे–धीरे मांझा हटाया। उसने देखा कबूतर को कहीं चोट नहीं आई है, हाँ माँझे से लिपटा हुआ है, जिसके कारण वह उड़ने में असमर्थ है। माँझा हटाते ही कबूतर पंख फड़फड़ाने लगा। और उड़ान भरकर अपने लक्ष्य की ओर चला गया।

मयंक ने आकाश से कहा– ''देख भाई! मैं इसीलिए कह रहा था कि पक्षियों को नुकसान पहुँचता है। वह तो उसको चोट नहीं पहुँची, पतंग की डोर से लिपटा हुआ था, वर्ना जख्मी होकर मर ही जाता।''

आकाश इतना ही कह पाया– ''ठीक है भाई!''

मयंक सीढ़ियों से नीचे उतर कर अपनी माँ के पास गया और पूछा– ''माँ! जगह–जगह पतंगें उड़ रही हैं। भाई कह रहे थे आज मकर संक्रांति है।''

माँ ने कहा– ''हाँ बेटा! हमारे देश में त्यौहारों का जाल बिछा हुआ है यह कहना अनुचित बात नहीं, यहाँ आए दिन कोई न कोई त्यौहार आता ही रहता है, और सभी त्यौहार एकता का पाठ पढ़ाते हैं।

आज मकर संक्रांति है बेटा! यह पर्व १५ जनवरी को ही मनाया जाता है।''

''माँ आपने तो कभी इस त्यौहार के बारे में नहीं बताया।'' ''तो अब सुनो... मकर संक्रांति एक पर्व है, इस दिन पतंगें उड़ाई जाती हैं, पतंगें तो बसंत पंचमी और पंद्रह अगस्त पर भी उड़ाई जाती हैं, लेकिन अच्छे कार्यों की शुरुआत मकर संक्रांति से ही होती है। हिंदुओं का यह प्रमुख त्यौहार है इसी के साथ सभी मंगल कार्य होते हैं।''

''तो माँ पतंग उड़ाना क्या अच्छे कार्यों में आता है?'' ''बेटा! उत्सव मनाने के लिए पतंग का सहारा लिया जाता है। पतंग उड़ाना स्वतंत्रता का प्रतीक है।'' मयंक ने पूछा– ''माँ! मकर संक्रांति पर ही क्यों पतंग उड़ाई जाती है? पतंग तो कभी भी उड़ा लो।''

''बेटे! पतंग उड़ाना इस त्यौहार की एक परंपरा है। अधिकतर बड़े और बच्चे पतंग उड़ाकर खुशी मनाते हैं मकर संक्रांति वाले दिन पतंग उड़ाने की परंपरा भगवान श्रीराम के समय से प्रारंभ हुई थी और इस परंपरा को आज भी निभाया जाता है। इस पर्व से ही शुभ कार्यों का आरंभ होता है।''

''लेकिन यह तो खतरनाक है, अभी छत पर कबूतर घायल हो गया।''

''सच में बेटा! कई बार थोड़ी–सी नासमझी से हँसी–खुशी का वातावरण दुख में बदल जाता है। बच्चे क्या बड़े भी सुनते ही कहा हैं? पतंग उड़ाना और पतंग लूटना दोनों ही खतरनाक हैं... बेटा।''

''पतंग उड़ाओ खुले में, और पतंग को लूटने का प्रयत्न बिल्कुल ना करो।''

''हाँ माँ! मैं समझ गया ऊपर जाकर भाई को भी समझाने का प्रयास करता हूँ और भाई को बुला कर लाता हूँ। फिर हम सब मिलकर गजक, रेवड़ी, मूँगफली, तिल पट्टी से मकर संक्रांति का पर्व मनाकर स्वतंत्रता का उत्सव मनाते हैं।'' इतना कह मयंक भाई को बुलाने छत पर चला गया।

– गाजियाबाद (उ. प्र.)

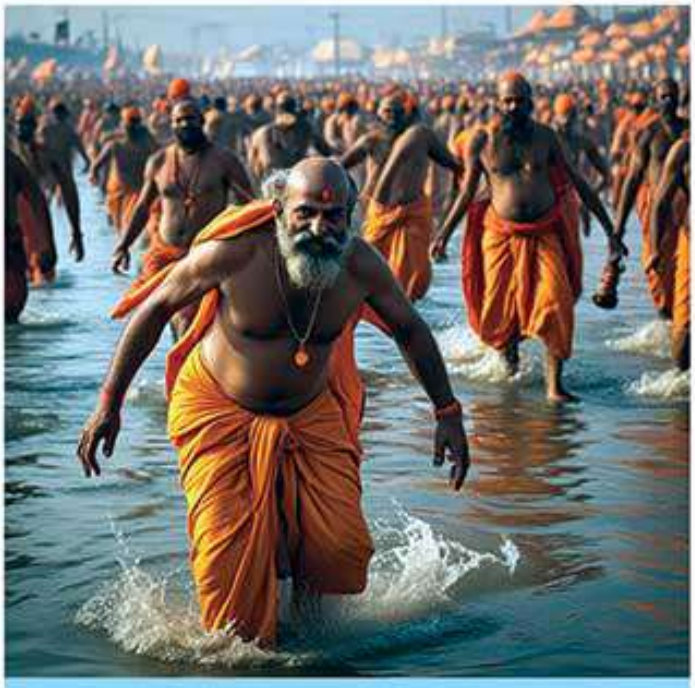

महा कुंभ मेला

– गोपाल माहेश्वरी

मेला है भाई मेला है, महाकुंभ का मेला है।

दादी के संग मैं प्रयाग के, इस मेले में जाऊँगा।
गंगा यमुना और सरस्वती, संगम जहाँ, नहाऊँगा।
धर्म संस्कृति का भारत की, अवसर यह अलबेला है।।

दूर–दूर तक लगे तम्बुओं में, बैठे हैं सन्त महंत।
लोग ही लोग दिखाई देते, जिनकी गिनती नहीं, अनंत।
गंगा यमुना की धारा–सा, यहाँ भीड़ का रेला है।।

अजब–गजब कुछ साधु तो कुछ कितने हैं शांत सरल।
कहीं कथा, सत्संग, कीर्तन, भण्डारों में है हलचल।
लाखों लोग साथ रहते हैं फिर भी नहीं झमेला है।।

अलग–अलग पूजा की पद्धति अलग अखाड़े वेश अनेक।
धर्म सभी का एक सनातन, हिंदू हैं सब, संस्कृति एक।
सबकी सुन, सबको फल देता ईश्वर एक अकेला है।।

– इन्दौर (म. प्र.)

अनोखी याददाश्त

देवांशु वत्स

संघ के उत्सव

– नारायण चौहान

प्यारे बच्चो! मैं देश के हितों को सर्वोपरि मानता हूँ। देश और समाज और उसकी एकता और अखंडता के लिए मैं कार्य करता हूँ। भारतवर्ष की संस्कृति और हमारी परंपरा हमारी विरासत के साथ हमारा देश अखंड रहे। इस हेतु वर्षभर में हमारे स्वयंसेवकों द्वारा छः उत्सव मनाए जाते हैं।

इनका महत्व और उद्देश्य आप सभी को समझाता हूँ।

'वर्ष प्रतिपदा' उन छः त्यौहारों में से एक है जिन्हें हम आधिकारिक तौर पर मनाते हैं। अन्य पाँच हैं विजयादशमी, मकर संक्रांति, हिंदू साम्राज्य दिवस, गुरुपूर्णिमा और रक्षाबंधन महोत्सव।

हमने इन छः त्यौहारों को क्यों चुना? इस कदम के पीछे के उद्देश्यों को मैं इस आत्मकथा में बताना चाहता हूँ।

ये छः उत्सव में मेरी स्थापना से भी पहले हिन्दू समाज मनाते आ रहा है। यहाँ यह समझना चाहिए कि संघ ने कोई नया त्यौहार नहीं बनाया है। लेकिन ये त्यौहार राष्ट्रीय महत्व के हैं और हिंदू समाज इन्हें अनादि काल से मनाता आ रहा है।

इन त्यौहारों के साथ बलिदान देने वाले महापुरुषों की स्मृतियाँ जुड़ी हुई हैं। इसलिए हम इन त्यौहारों के माध्यम से समाज को जाग्रत करते हैं।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इन त्यौहारों के आयोजन से हमें अपना कार्य विस्तार करने में सहायता मिलती है। त्यौहार आमतौर पर शाखा स्तर पर मनाए जाते हैं। एक बार शाखा त्यौहार मनाने का निर्णय करती है, तो इससे स्थानीय समाज को मेरी विचारधारा और काम को दिखाने में सहायता मिलती है। इससे स्थानीय समुदाय को मुझसे जोड़ने में सहायता मिलती है। इस प्रकार, ये त्यौहार मेरे कार्य विस्तार के लिए अनुकूल वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मैं सदैव देश के हितों को सर्वोपरि मानता हूँ। देश और समाज और उसकी एकता और अखंडता के लिए मैं कार्य करता हूँ। भारतवर्ष की संस्कृति और हमारी परंपरा हमारी विरासत के साथ हमारा देश अखंड रहे। इस हेतु पूरे वर्षभर में मेरे स्वयंसेवक कार्य करते हैं।

मेरे उत्सवों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

पहला उत्सव है
विजयादशमी महोत्सव

वैसे तो स्वयंसेवकों के लिए सभी त्यौहार समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, किन्तु यह त्यौहार उनके हृदय में विशेष स्थान रखता है क्योंकि मेरी स्थापना विजयादशमी (२७ सितम्बर १९२५) के दिन हुई थी। प्रत्येक वर्ष, विजयादशमी हिन्दू कैलेंडर के अनुसार एक अलग दिन पर पड़ती है। विजयादशमी का

त्यौहार देश के लगभग प्रत्येक भाग में मनाया जाता है और इसके साथ कई कहानियाँ और किंवदंतियाँ जुड़ी हुई हैं। जिनमें सबसे लोकप्रिय है भारत में सबसे पूजनीय भगवान राम द्वारा राक्षसराज रावण की हार।

हिंदू महाकाव्य महाभारत के अनुसार, इस दिन पांडवों का १४ वर्ष का वनवास समाप्त हुआ था और उन्होंने अपने शस्त्रों की पूजा की थी। इस समारोह को शस्त्र-पूजन कहा जाता है। मेरे स्वयंसेवक इस दिन शस्त्र-पूजन का प्रतीकात्मक समारोह करते हैं। इसका उद्देश्य स्वयंसेवकों में वीरता और वीरता के गुणों का विकास करना है।

यह त्यौहार भारत के समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास से जुड़ा हुआ है और इसके साथ कई प्राचीन कहानियाँ, कथाएँ और किंवदंतियाँ जुड़ी हुई हैं। हालाँकि, उन सभी का संदेश एक ही है- 'बुराई पर अच्छाई की जीत।'

विजया दशमी को यह परंपरा रही है कि सरसंघचालक इस दिन नागपुर में एक समारोह में सार्वजनिक भाषण देते हैं, जिसमें हजारों स्वयंसेवक उपस्थित होते हैं और नवीन संचार साधनों से अब इसे देश-विदेश के लाखों स्वयंसेवक भी सुनते हैं।

दूसरा उत्सव आता है
मकर संक्रांति

यह हिंदुओं के सबसे महत्वपूर्ण त्यौहारों में से एक हैं और इसे माघ (जनवरी) के महीने में मनाया जाता है। इस दिन सूर्य का उत्तर की ओर घूमते हुए उदय होना प्रारंभ होता है। इस गति को उत्तरायण के नाम से भी जाना जाता है। यह त्यौहार सूर्य के मकर राशि में प्रवेश के साथ उत्तरायण की यात्रा के प्रारंभ का प्रतीक है।

आरएसएस इसे कई कारणों से एक त्यौहार के रूप में मनाता है। यह वह समय अवधि है जो अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर तथा मृत्यु से अमृत की ओर यात्रा का प्रतीक है। इस पवित्र दिन पर भारतीय नदियों में पवित्र स्नान करते हैं। ऐतिहासिक रूप से, यह त्यौहार कई महत्वपूर्ण घटनाओं से जुड़ा हुआ है। मेरी शाखाओं में दैनिक दिनचर्या के बाद, स्वयंसेवकों के बीच तिल और गुड़ का मिश्रण वितरित किया जाता है। शाखाओं में मेरे वरिष्ठ पदाधिकारी समाज के लिए इस सदियों पुराने त्यौहार के महत्व के बारे में व्याख्यान देते हैं। कई बार, कई शाखाएँ एक साथ मिलकर इसे मनाती हैं।

यह वह समय है जब स्वयंसेवकों को सोचना चाहिए कि उन्होंने देश के लिए व्यक्तिगत रूप से क्या किया है। इस अवसर पर एक नया आरंभ किया जाना चाहिए और... स्वयंसेवकों को यह संकल्प लेना चाहिए कि वे समाज के कल्याण के लिए निस्वार्थ भाव से काम करेंगे।

तीसरा उत्सव है
वर्ष प्रतिपदा महोत्सव

मेरे स्वयंसेवक इसे हिंदू नववर्ष के रूप में मनाते हैं। पारंपरिक भारतीय ज्ञान और शास्त्रों के

अनुसार, भगवान ब्रह्मा ने इस विशेष दिन पर ब्रह्मांड का निर्माण किया था। इस दिन से जुड़ी कई महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। सम्राट विक्रमादित्य ने शक आक्रमणकारियों को हराया था और उन्हें भारत से भागने पर विवश कर दिया था। इसलिए इस दिन एक नया संवत्सर प्रारंभ हुआ था, जिसे विक्रमी संवत कहा जाता है।

यह देश के कई भागों में विशेषकर ग्रामीण भारत में, कई कारणों से सबसे लोकप्रिय नववर्ष में से एक है। माना जाता है कि भगवान श्रीराम का अयोध्या के राजा के रूप में राज्याभिषेक इसी दिन हुआ था। साथ ही, भारत के सबसे महान आधुनिक युग के सुधारकों में से एक, महर्षि दयानंद ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना की थी।

यह उत्सव पुराने वर्ष के अंत और नए वर्ष के आरंभ का प्रतीक है। इसलिए यह पिछले वर्ष के काम की समीक्षा करने और आने वाले वर्ष के लिए योजना बनाने का समय है।

इस दिन स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश पहनते हैं और भगवा ध्वज फहराने आर.एस.एस. के संस्थापक की याद में 'आद्य सरसंघचालक प्रणाम' नामक विशेष प्रणाम करते हैं। जहाँ भी संभव हो, 'घोष' बजाया जाता है। इस अवसर पर प्राय: मेरी कई शाखाएँ एक साथ आती हैं और प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती है। इस दिन मेरे प्रमुख पदाधिकारी बौद्धिक प्रवचन देते हैं। कई बार समाज के किसी प्रमुख व्यक्ति को मुख्य अतिथि के रूप में भी बुलाया जाता है।

चौथा उत्सव है हिंदू साम्राज्य दिवस

यह त्यौहार मेरे स्वयंसेवकों द्वारा मनाए जाने वाले बाकी त्यौहारों से अलग है। जबकि मनाए जाने वाले बाकी त्यौहार संघ के बाहर भी आम लोगों द्वारा मनाए जाते हैं। यह एकमात्र ऐसा त्यौहार है जिसे आमतौर पर समाज में बड़े स्तर पर नहीं मनाया जाता है। वास्तव में, कई लोगों को यह भी नहीं पता कि एक ऐतिहासिक घटना घटी थी, जिसे मनाया जाना चाहिए।

यह त्यौहार मराठा योद्धा और राजा छत्रपति शिवाजी के राज्याभिषेक की याद में मनाया जाता है। १९ मई १६७४ को राज्याभिषेक किया गया था। इस राज्याभिषेक के साथ ही आधिकारिक तौर पर एक हिंदू साम्राज्य अस्तित्व में आया क्योंकि शिवाजी ने घोषणा की– ''हिंदू स्वशासन स्थापित होना चाहिए, यही ईश्वर की इच्छा है.... यह राज्य शिवाजी का नहीं बल्कि धर्म का है।''

पाँचवा उत्सव है गुरुपूर्णिमा

हिंदू धर्म में गुरु का स्थान भगवान से भी ऊपर माना जाता है। यह पर्व जीवन जीने का सही तरीका दिखाने और ज्ञान देने के लिए गुरु के प्रति आभार व्यक्त करने का अवसर हैं। संघ में भगवा ध्वज को ही गुरु माना जाता है और इस दिन स्वयंसेवक भगवा ध्वज की पूजा करते हैं।

यह त्यौहार हिंदू महीने के आषाढ़ में पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इस दिन को आषाढ़ी पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। स्वयंसेवक सामान्यत: गणवेश या सफेद कपड़े (अधिकांशत: धोती–कुर्ता या कुर्ता–पायजामा जैसी पारंपरिक भारतीय पोशाक) और इस अवसर पर काली टोपी पहनते हैं और पुष्पांजलि अर्पित करके भगवा ध्वज की पूजा करते हैं। इसके बाद जीवन में गुरु के महत्व पर बौद्धिक प्रवचन होते हैं और स्वयंसेवकों को याद दिलाया जाता है कि मैने गुरु के रूप में किसी व्यक्ति के बजाय भगवा ध्वज को क्यों चुना।

इस महोत्सव के माध्यम से दिया गया संदेश छोटा किन्तु काफी सार्थक है कि विचारधारा किसी भी व्यक्ति से बड़ी होती है और संघ एक व्यक्ति–केंद्रित संगठन नहीं बल्कि विचारधारा से प्रेरित संगठन है।

छठा उत्सव है
रक्षाबंधन

यह भारत में बहुत लोकप्रिय त्यौहार है और लगभग सभी समुदायों और धर्मों द्वारा मनाया जाता है। बहनें अपने भाई की कलाई पर रक्षा के प्रति वचनबद्धता के प्रतीक के रूप में राखी नामक धागा बांधती हैं।

इस त्यौहार से जुड़ी कई ऐतिहासिक घटनाएँ और कहानियाँ हैं। मेरे स्वयंसेवक एक-दूसरे की कलाई पर राखी बाँधकर रक्षाबंधन मनाते हैं, जो एक-दूसरे की रक्षा करने और एक-दूसरे के साथ खड़े रहने की उनकी प्रतिबद्धता का प्रतीक है, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों। इससे स्वयंसेवकों के बीच भाईचारे की भावना को सुदृढ़ करने में सहायता मिलती है।

पिछले कई दशकों में मैंने इस कार्यक्रम को बहुत ही रोचक तरीके से आगे बढ़ाया है।

एक-दूसरे को पवित्र धागा बाँधने के बाद स्वयंसेवक पास की (सेवा बस्तियों) में जाकर वहाँ रहने वाले लोगों को राखी बाँधते हैं।

- इन्दौर
(म. प्र.)

रोचक जानकारी

विचित्र किन्तु सत्य

- डॉ. श्याम मनोहर व्यास

* शुतुरमुर्ग संसार का सबसे बड़ा पक्षी होते हुए भी उड़ने में असमर्थ है। परन्तु दौड़ने में बहुत तेज है। उसकी चाल लगभग १०० किलोमीटर प्रति घंटा है।

* व्हेल मछली सबसे बड़ा समुद्री जीव है जो ४५० वर्षों तक जीवित रहती है।

* विश्व की सबसे बड़ी चट्टान ऑस्ट्रेलिया की उत्तरी सीमा में है जो ३० किलोमीटर लम्बी और ३ किलोमीटर चौड़ी है।

* संसार भर के चूहे १८ करोड़ टन अन्न अथवा खाद्य पदार्थ खा जाते हैं।

* प्रसिद्ध ग्रांड ट्रंक रोड का निर्माण शेरशाह सूरी (१५४०-४५) ने किया।

* स्पेन एक ऐसा देश है जहाँ कपड़े पर अखबार छपता है।

* जापान में बालक को जन्मदिन से ही एक वर्ष का माना जाता है।

* 'आयरन ऑक्साइड' को नकली सोना कहते हैं।

* महाभारत का प्राचीन नाम 'जय संहिता' था।

* मकड़ी एक वर्ष तक बिना भोजन किए रह सकती है।

* चन्द्रमा का प्रकाश पृथ्वी तक पहुँचने में १.३ सेकण्ड का समय लगता है।

* सौरमण्डल का विशालकाय ग्रह बृहस्पति है।

- उदयपुर (राजस्थान)

पुस्तक परिचय

फिर आए राम अयोध्या में

मूल्य- २५०/-

बाल साहित्य संसार के अग्रगण्य साहित्यकारों में श्री. प्रकाश मनु अत्यन्त विख्यात नाम है। भगवान श्रीराम की कथा को बाल-चित्त के लिए आकर्षणीय बनाकर प्रस्तुत किया गया है आपकी इस पुस्तक में। रामकथा स्वयं ही मधुरतम है इसे बालोचित शब्दों में संजोकर और भी सुग्राह्य बना दिया है मनु जी ने।

प्रकाशक- डायमंड बुक्स प्रा.लि. -३० ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस- II नई दिल्ली-११००२०

देश हमारा भारत प्यारा

मूल्य- २५०/-

बाल साहित्य के प्रसिद्ध रचनाकार डॉ. सतीशचन्द्र भगत ने देशभर के ७७ से अधिक प्रसिद्ध रचनाकारों की राष्ट्रभक्तिमयी रचनाओं का संपादित राष्ट्रीय बाल काव्य संकलन प्रस्तुत किया है। संपादक के रूप में श्री. भगत का श्रम एवं समझ दोनों प्रणम्य है।

प्रकाशक- शशि प्रकाशन, गाँव कालिकापुर पो. लक्ष्मीनियां व्हाया बलुआ बाजार जिला सुपौल-८५४३३९ (बिहार)

स्वतंत्रता की वीरांगनाएँ जननायक एवं बालोपयोगी गीत

मूल्य- २००/-

श्री. प्रदीप 'नवीन' सिद्ध हस्त रचनाकार हैं। वर्षों से आपकी लेखनी साहित्य सेवारत है। आशु कवित्व की प्रतिभा के धनी श्री. नवीन इस पुस्तक में भारतीय स्वातंत्र्य समर की वीरांगनाओं एवं अन्य राष्ट्रीय विषयों पर आपके सरस गीत प्रेरणा और सरलता से ओत-प्रोत हैं।

प्रकाशक- भव्या पब्लिकेशन, एलजी ४२ लोअर ग्राउण्ड करतार आर्केड रायसेन रोड, भोपाल-४६२०२३ (म. प्र.)

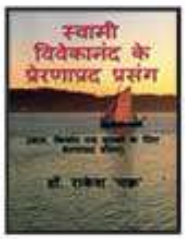

स्वामी विवेकानंद के प्रेरणापद प्रसंग

मूल्य- २००/-

डॉ. राकेश 'चक्र' बालसाहित्य साधना के अनूठे आदर्श हैं। सतत् लेखन द्वारा आपने बाल साहित्य की अनेक विधाओं को पोषित किया है। स्वामी विवेकानंद जी के पावन प्रसंगों पर केन्द्रित यह भी एक अनूठी पुस्तक है जो स्वामी जी के विराट व्यक्तित्व व कर्त्तव्य की झाँकी प्रस्तुत करती है।

प्रकाशक- क्रियेशन इन्टरप्राइजेस पार्श्वनाथ प्लाजा दिल्ली रोड, मुरादाबाद (उ. प्र.)

मन में अगर रहे उत्साह

मूल्य- १२५/-

बाल साहित्य जगत के लोक की भीनी गंध से सुरभित सरस रचनाओं के रससिद्ध रचनाकार हैं श्री. राजा चौरसिया । आपकी लेखनी से निकली सुन्दर बाल कविताओं का संग्रह है यह पुस्तक।

प्रकाशक- पाथेय प्रकाशन, जबलपुर (म. प्र.)

मुर्गे ने ऐसे बाँग दी

– भूपिंदर सिंह आशट

यह कहानी उस समय की है जब पशु-पक्षी सभी मिलकर एक साथ रहते थे। उस समय न तो पक्षियों ने घोसलों में रहना शुरू किया था। और न ही जानवरों ने जमीन खोदकर अपने घर बनाए थे। वह सब मिलजुल कर जमीन पर ही बसेरा करते थे। चिड़ियों ने तो स्थान-स्थान पर अपनी बस्तियाँ बना ली थीं। उनके छोटे-छोटे मकान थे। मकान बनाने के लिए उन्होंने मिट्टी व घास-फूस की सहायता ली थी। वे सब मिलजुल कर खाना पकाती, खाना पकाकर खाती, खेलती, नाचती-गाती।

यह सब तो ठीक था किन्तु उनको आग जलानी नहीं आती थी। वह आग को बड़ी कुशलता से सहेज कर रखती थी कि कहीं बुझ ना जाए। आग बुझी तो बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

एक दिन ऐसा ही हुआ जिसका डर था। जो चिड़िया आग की रखवाली करती थी, वह आग को ढँकना ही भूल गई और आग बुझ गई। वर्षा ने आग को बुझाकर समाप्त कर दिया। जब आग ही न रही तो, सभी को पेट भरने की चिंता होनी स्वाभाविक थी।

इसी बीच किसी ने सूचना दी कि यहाँ से कुछ दूरी पर टीले के दूसरी ओर मनुष्यों की एक बस्ती है। उनके यहाँ आग है। मनुष्य आग जलाना भी जानता है। किन्तु इतनी दूर आग लेने जाएगा कौन? रास्ते में पड़ने वाले टीलों को पार कौन करेगा? और फिर ये भी पता नहीं कि आदमी आग देगा भी या नहीं? सभी चिड़ियाँ इस बात पर विचार करने लगीं।

सारी बात सुनकर एक मुर्गा आगे आया और छाती फुलाकर बोला- ''मैं लाऊँगा आग।''

''किन्तु इतनी दूर से आप आग कैसे लाओगे? अजनबी लोगों का सामना कैसे कर पाओगे?'' चिड़ियाएँ मुर्गे के लिए चिंतातुर थीं। किन्तु वह थोड़ा बड़बोला भी था।

''मैं आग भी ले आऊँगा और बस्ती के लोगों का सामना भी कर लूँगा।''

इतना कहकर मुर्गा बस्ती की ओर उड़ चला। मुर्गे के पंख बहुत ताकतवर थे। वह बहुत ऊँचा उड़ा और टीला पार करके मनुष्यों की बस्ती में जा पहुँचा। वहाँ जाकर उसने क्या देखा कि मनुष्यों की बस्ती तो

बहुत सुंदर है। बड़े-बड़े घर बने हैं। खेती भी होती है। मुर्गा आग की खोज करता हुआ एक घर के आँगन में गया। उसने जलती हुई लकड़ी का एक टुकड़ा मुँह में लिया और उड़ने लगा।

इसी बीच घर के मालिक दृष्टि उस पर पड़ गई। वह उसके चमकदार पंखों पर मोहित था। सो उसने लपक कर मुर्गे को काबू कर लिया। इसी बीच जलती हुई लकड़ी, मुर्गे के मुँह से निकलकर नीचे पड़े घास-फूंस पर गिर गई। इससे मुर्गा आग की चपेट में आ गया और उसके सुंदर पंख जल गए। वह तड़पने लगा।

मुर्गे की ऐसी दयनीय स्थिति देखकर आदमी को बहुत पछतावा हुआ। आदमी उसके समीप आकर बोला- ''अरे, रंग-बिरंगे पंखों वाले प्राणी! तू कौन है? और कहाँ से आया? हमने तुझे पहले कभी नहीं देखा।''

मुर्गे ने आदमी को अपना परिचय दिया। और दर्द भरी आवाज में बोला- ''अब मैं कभी भी उड़ान न भर सकूँगा। क्योंकि मेरे पंख झुलस गए हैं। उधर चिड़ियाएँ मेरी प्रतीक्षा कर रहीं होंगी। अब मैं उन तक जा नहीं पाऊँगा। इससे वह भूखी मर जाएँगी।''

''तुम उनकी चिंता छोड़ दो। मैं तुम्हारा उपचार करूँगा।'' मुर्गा लाचार था। किन्तु आदमी ने उसकी बहुत सेवा की। मुर्गा शीघ्र ही ठीक हो गया। किन्तु वह अब ऊँचा नहीं उड़ सकता था।

आदमी मुर्गे से बहुत प्रभावित था। उसने मुर्गे को बंदी बना कर रख लिया। मुर्गा मन ही मन दुखी था। अधिकांश उसका ध्यान चिड़ियों के पास रहता था। कि वह बिना आग के खाना कैसे बना पाएँगी?

इसी सोच में वह पूरी रात सो न पाता और सुबह जल्दी जाग जाता। मुर्गा फिर ऊँची आवाज में बाँग देता कि मेरी आवाज कभी न कभी तो अवश्य उन तक पहुँचेगी। आवाज सुनकर वे कभी न कभी तो मुझे अवश्य मुक्त करा लेंगीं।

- घग्गा पटियाला (पंजाब)

बहुत सम्मान्य संपादक महोदय जी!

'देवपुत्र' का नवम्बर २०२४ का अंक प्राप्त कर पहले जैसी अछोर प्रसन्नता हुई, अत: एतदर्थ बार-बार धन्यवाद। 'अपनी बात' संपादकीय में प्रासंगिकता को पूर्ववत् प्राथमिकता देते हुए आपने उस वर्तमान बचपन को चेताने का भरपूर प्रयास किया है, जो अपने परिवार, समाज और देश का भविष्य है। जो पेड़ अपनी जड़ों को भूल जाते हैं, वे अधिक दिनों तक हरे नहीं रह पाते हैं। इस सत्य का बोध कराना आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य है।

साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे जी की कहानी 'वृन्दा पहुँची अपने घर' जितनी भावनात्मक है, उतनी ही प्रेरणात्मक है। भोजनालय में कार्यरत महिला बहन का यह कथन पूज्य भाव के स्वभाव को उद्भासित करता है-

'यह तुलती माता आपको कितने में मिली है? ऐसी तुलती माता मैंने वर्षों से नहीं देखी।' डॉ. दवे जी उसकी सहजता से ओतप्रोत जिज्ञासा के उत्तर में कहते हैं- 'आपने जितनी आत्मीयता से तुलती माता को निहारा और चरण-स्पर्श किया, मुझे लगता है कि यह वृंदा अब मेरे घर जाने के बजाए आपके घर जाना चाहिए। मुझे इस बात की गौरवानुभूति है कि वह भेंट सही हाथों में और सही घर तक पहुँच गई है। मुझे पता है उस बहन में साक्षात भारत माता के दर्शन मैंने अपनी आँखों से किए हैं।'

अन्य रचनाएँ भी रोचक एवं प्रेरक हैं। अनवरत सारस्वत प्रयास के लिए संपादकीय परिवार को भी ढेर सारी बधाइयों के साथ, साभार नमस्कार।

- राजा चौरसिया, कटनी (म. प्र.)

नहीं नहीं यह तो है.....?

– पं. नन्दकिशोर निर्झर

(१) गेहूँ, मक्का, तिलहन, दलहन
जिनसे हमको मिलते हैं।
मधुर-मधुर फल सुन्दर-सुन्दर
फूल जहाँ पर खिलते हैं।
काली भूरी दोमट बलुई
जिनकी मिट्टी उर्वर है।
कृषक सींचते श्रम सीकर से
हम सब जिन पर निर्भर हैं
बाग, बगीचे, जंगल, रेत?
नहीं नहीं यह तो है.....।

(२) कालू काका खेत जोतता
भँवरन भैंस चराता है।
नहीं झगड़ते मिलजुल रहते
सबमें गहरा नाता है।
कल-कल नदियाँ ताल तलैये
हरे-भरे हैं खेत खड़े।
गायें, भैंसें, भेड़, बकरियाँ
घोड़े, गदहे, ऊँट बड़े।।
स्वर्ग-नरक, सागर या नाव?
नहीं नहीं यह तो है.....।

(३) भीड़-भड़क्का शोर-शराबा
दिनभर बहता रेला है।
चाट, मिठाई, खेल-खिलौने
लगता जैसे मेला है।।
कहीं बंदरिया नाच-दिखाए
और कहीं जादू के खेल।
मोटर-रिक्शा घोड़ा-गाड़ी
कहीं बुलाती छुक-छुक रेल।
सर्कस, मेला, हाट, नहर?
नहीं नहीं यह तो है.....।

(४) लम्बे-लम्बे वृक्ष सुहानी छाया
मन में मोड़ भरे।
झर-झर झरनों की स्वर लहरी
सारा आलस दूर करें।
हाथी-चीते शेर विचरते
पक्षी करते हैं कलरव
खनिजों जड़ी बूटियाँ का घर
रहता जहाँ नित्य उत्सव
वृक्ष नदी झरना या घन?
नहीं नहीं यह तो है.....।

– चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

मुकरी– पहेली विधा का ही एक मनोरंजक प्रकार है। कविताबद्ध रूप में कुछ गाने योग्य तुकांत पंक्तियों में रोचक विवरण प्रस्तुत कर अंत चौंकाने वाला उत्तर पूछा जाता है। संभवत: अंतिम पंक्ति पहले पंक्ति के सारे अनुमानित उत्तरों को मना करने (मुकरने) के बाद नया उत्तर सिद्ध करने के कारण इन्हें मुकरियाँ कहा जाता है। यह पहेलियों का लुप्त होता प्रकार है। लेकिन आप नई मुकरियाँ बनाकर इसे जीवित रख सकते हैं।

धन्यवाद मुंबई

– ताराचंद मकसाने

सीमा आज मुंबई से अपने गाँव लौट रही थी। कक्षा १२वीं में पढ़ने वाली सीमा अपनी माँ शिवानी के साथ दीपावली की छुट्टियों में अपने मामा के पास आयी हुई थी। सीमा को छत्रपति शिवाजी महाराज स्टेशन पर छोड़ने के लिए उसके मामा–मामी और उनकी ८ वर्षीय बेटी अनुश्री भी आयी थी।

आज रविवार का दिन होने से सभी की छुट्टी थी। ट्रेन छूटने में अभी ५ मिनिट का अवकाश था। शिवानी अपनी सीट पर बैठ गई थी। परन्तु सीमा अपने कोच के दरवाजे के बाहर खड़ी होकर अपने मामा से बातें कर रही थी। मामा और सीमा बातों में इतने खो गए थे कि उन्हें समय का ध्यान ही नहीं रहा, गार्ड की सीटी से दोनों की बातों की तेज दौड़ती ट्रेन को ब्रेक लगा। सीमा ने अपने मामा–मामी के चरण स्पर्श किए, अनुश्री की पप्पी ली और तुरंत कोच में चढ़ गई।

अगले कुछ ही पलों में गाड़ी रवाना हो गई। सीमा ने खिड़की से बाहर हाथ निकालकर सभी को अभिवादन किया। गाड़ी ने प्लेटफॉर्म छोड़ दिया था। कुछ समय के बाद टीटी आया तो सीमा ने अपने टिकट चेक करवाए। वह खिड़की से बाहर के दृश्य देखने लगी।

सीमा पहली बार मायानगरी मुंबई आयी थी। उसे यह शहर बहुत ही पसंद आया था। इस शहर की गतिशीलता से वह काफी प्रभावित हुई थी। मुंबई की लाइफ लाईन समझी जाने वाली लोकल ट्रेनों की तो वह दीवानी हो गई थी। दोनों ओर से चलने वाली और लाखों लोगों को शहर के एक छोर से दूसरे छोर ले जाने वाली इन ट्रेनों में बिजली की स्फूर्ति से चढ़ते–उतरते लोगों को देखकर तो वह दाँतों तले अँगुली दबाती थी। सीमा यहाँ के लोगों की स्फूर्ति और चपलता से आश्चर्य चकित थी। लोकल ट्रेन के रुकने से पहले आधे से अधिक यात्री उतर जाते थे या चढ़ जाते थे।

एक दिन शाम को वह छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस पर भी गई थी। उसने देखा कि 'इंडिकेटर' पर दर्शाए गए समय के अनुसार ही लोकल ट्रेनें छूट रही थीं, इनका 'टाइमिंग' देखकर सीमा को बड़ा आश्चर्य हो रहा था। किसी 'इंडिकेटर' पर लिखा था कल्याण–५.५७ तो किसी 'इंडिकेटर' पर लिखा था, ठाणे–६.०३ इस बारे में उसने अपने मामा से पूछा तो उन्होंने बताया– ''सीमा, मुंबई में लोकल ट्रेनें समय की बहुत पाबंद हैं। जिस 'इंडीकेटर' पर कल्याण–५.५७ लिखा है वह ठीक ५ बजकर ५७ मिनिट पर कल्याण के लिए रवाना हो जाएगी तथा जिस 'इंडिकेटर' पर ठाणे–६.०३ लिखा है वह ठीक ६ बजकर ३ मिनिट पर ठाणे के लिए निकल जाएगी। तुम चाहो तो अपनी घड़ी लगाकर देख लेना, ये ट्रेनें अपने निर्धारित समय पर छूट जाएँगी।''

सीमा ने घड़ी की सुइयों पर अपनी दृष्टि गड़ा दी। उसकी घड़ी में जैसे ही ५ बजकर ५७ मिनिट हुए यह लोकल ट्रेन हल्का हॉर्न बजाते हुए निकल पड़ी। यह ट्रेन २ सेकेण्ड भी लेट नहीं हुई। सीमा की घड़ी में जब

५ बजकर ५८ मिनिट हुए तब तक तो ट्रेन स्टेशन से बाहर निकल चुकी थी।

ठीक इसी प्रकार ६ बजकर ३ मिनिट की ठाणे जाने वाली ट्रेन भी समय पर निकल पड़ी। सीमा कुतूहल भरी दृष्टि से लोकल ट्रेनों को देख रही थी। ये ट्रेन जैसे ही प्लेटफॉर्म से बाहर निकली तो 'इंडिकेटर' पर अगली ट्रेन का समय प्रदर्शित हो गया। सीमा 'इंडिकेटर' पर लिखी जानकारी ध्यानपूर्वक पढ़ रही थी। उसने देखा कि किसी 'इंडिकेटर' पर 'एफ' लिखा था तो किसी पर 'एस' लिखा था, उसने इस बारे में अपने मामा से पूछा– ''इंडिकेटर पर लिखे 'एस'/'एफ' का अर्थ है?''

मामा ने कहा– ''बेटी! 'एफ' का अर्थ है 'फास्ट' अर्थात तेज। 'फास्ट' लोकल ट्रेन कुछ निश्चित स्टेशनों पर ही रुकती है। 'एस' का अर्थ होता है 'स्लो' अर्थात धीमी। 'स्लो' लोकल ट्रेन सभी स्टेशनों पर रुकती है।''

सीमा काफी समय तक छत्रपति शिवाजी टर्मिनस पर लोकल ट्रेनों की आवाजाही का दृश्य देख रही थी। लोकल ट्रेनें अपने भीतर क्षमता से अधिक यात्रियों को भरकर उपनगरों का रुख कर रही थी। दो

मिनिट पहले पूरी तरह से खाली हो चुके प्लेटफॉर्म देखते ही देखते लोगों की भीड़ से फिर पट रहे थे। एक प्लेटफॉर्म पर तो यात्रियों की अनगिनत भीड़ देखकर सीमा घबरा गई, उसके मुँह से अनायास निकल पड़ा– ''बाप रे! इतनी भीड़, मैंने अपने जीवन में लोगों की इतनी भीड़ कभी नहीं देखी, क्या ये सब एक ही रेल में चढ़ेंगे?''

''सीमा! इस प्लेटफॉर्म पर आने वाली लोकल ट्रेन मात्र ३ मिनिट लेट हो गई है। मैं दूसरे शब्दों में यूँ कह सकता हूँ कि कर्जत जाने वाली ६.१३ की लोकल ट्रेन अभी तक प्लेटफॉर्म पर नहीं आयी है। जबकि इस समय घड़ी में ६ बजकर १६ मिनिट हो गए हैं। इसी प्लेटफॉर्म से ६.१३ की ट्रेन के जाने के बाद ६.२१ की बदलापुर जाने वाली ट्रेन आती है। पहली ट्रेन लेट हो जाने से तथा अगली ट्रेन का समय हो जाने से इस प्लेटफॉर्म पर दो लोकल ट्रेनों के यात्री एकसाथ जमा हो गए हैं। इसलिए यहाँ पर भीड़ अधिक हो गई है।'' मामा ने उसकी घबराहट को दूर करते हुए कहा।

सीमा के लिए यह अनोखा दृश्य था किन्तु उसके मामा ने बताया कि मुंबई में इस प्रकार के दृश्य तो आम बात है। सीमा ने देखा कि जब उस अपार भीड़ वाले प्लेटफॉर्म पर लोकल ट्रेन आयी तो उसके रुकने की प्रतीक्षा किए बिना लोग ट्रेन में सवार होने लग गए। मानो प्लेटफॉर्म पर खड़े लोगों ने ट्रेन पर धावा बोल दिया है। सीमा ने मुंबई के बारे में जैसा सुना था वैसा ही उसने देखा।

सीमा ने अपने दस दिनों के निवास के समय मुंबई के सभी पर्यटन स्थल देख लिए थे। इनमें गेट वे ऑफ इंडिया, ताजमहल होटल, प्रिंस वेल्स म्यूजियम, मच्छीघर, भारतीय रिजर्व बैंक का मॉनेटरी म्यूजियम, हैंगिंग गार्डन, जुहू चौपाटी, मरीन लाईन्स, एसेल वर्ल्ड, महालक्ष्मी रेसकार्स, देश का पहल अंडर सी टनेल यानि समुद्र के नीचे बनी सुरंग, बांद्रा–वर्ली सी लिंक ब्रीज के अलावा उसने एक दिन रात को मीन

लाईन्स पर आकर क्वीन्स नेकलेस का मनोहर दृश्य भी देखा था। एक रविवार को सीमा नी अमिताभ बच्चन, अक्षय कुमार, अनिल कपूर आदि सुपरस्टारों के बंगले भी देखे, किन्तु वह इस शहर की रफ्तार से बहुत प्रभावित हुई थी।

सीमा ने अब तक केवल किताबों में ही पढ़ा था कि समय अनमोल होता है। परंतु उसने इन बातों पर कभी अमल नहीं किया था। सीमा सोचने लगी कि वह तो अपनी घड़ी भी कभी-कभार ही देखती है। उसकी सहेली भाविका जब उसे कॉलेज चलने के लिए आवाज देती है तभी वह अपनी तैयारी आरंभ करती है। कई बार जब भाविका को देरी हो जाती है तो वह भी 'लेट' हो जाती है। उसने कभी अपनी समय-सारिणी बनायी ही नहीं थी। वह छुट्टी का दिन भी यूँ ही नष्ट कर देती थी। सीमा ने समय के महत्व को कभी समझने का प्रयत्न भी नहीं किया था।

''ओ सीमा... सीमा... बेटी सो गई क्या?'' अतीत के सागर में गहरी डुबकियाँ लगाती सीमा अपनी माँ की तेज पुकार सुनकर वर्तमान में लौटी।

''अरे! तुम कहाँ खो गई थी, मैं कब से तुम्हें पुकार रही हूँ। मुझे भूख लगी है जरा ऊपर रखी थैली में से टिफिन निकाल दो।'' माँ ने कहा। सीमा ने टिफिन उतार कर माँ के सामने रख दिया।

''माँ! मैं फिर से मुंबई पहुँच गई थी। माँ तुमने देखा है कि मामा समय के कितने पाबंद हैं। कभी दो मिनिट की देरी हो जाने पर भी वे मामी पर कितना गुस्सा करते थे। वे अपना हर काम एक निश्चित समय पर करते हैं। उनके सोने और उठने का समय निश्चित है। रविवार को छुट्टी के दिन भी उन्होंने अपनी समय सारणी बना रखी है। कब टीवी देखना है, कब रेडियो सुनना है कब पत्र-पत्रिकाएँ पढ़नी हैं। यह सब निर्धारित समय के अनुसार होता है।'' सीमा एक ही साँस में अनवरत बोल रही थी।

''बेटा! थोड़ी साँस ले ले।'' माँ ने चुटकी लेते हुए कहा।

''माँ! मैंने भी अब यह निर्णय ले लिया है कि मैं घर पहुँचते ही अपनी समय-सारिणी बनाऊँगी। अपना हर काम समय पर करूँगी। अब मेरी आँखें खुल गई हैं। मैंने जान लिया है कि समय बहुत अनमोल होता है, मैं अपने एक-एक मिनिट का सदुपयोग करूँगी।''

सीमा की अत्मविश्वास भरी बातें सुनकर और उसमें अचानक आए सुखद बदलाव से शिवानी प्रसन्न हो गई और खिड़की के बाहर मुंबई दिशा की ओर देखते हुए धीरे से बोली-

''धन्यवाद मुंबई!''

''कुछ कहा, माँ आपने?''

''कुछ भी तो नहीं!'' शिवानी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा।

- खारघर, नवी मुंबई (महाराष्ट्र)

कुंभ पर्व

कुंभ मेला भारत वर्ष में अनादिकाल से लगने वाला संसार का सबसे बड़ा मेला है। इसका आयोजन समुद्र मंथन की पौराणिक कथा से जुड़ा है। विशिष्ट ग्रह योगों के आधार पर यह प्रयाग (उ. प्र.), हरिद्वार (उ. प्र.) नासिक (महाराष्ट्र) और उज्जैन (म. प्र.) में प्रत्येक स्थान पर बारह वर्षों के अन्तराल पर लगता है। इसमें सनातन हिन्दू धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों एवं पूजा पद्धति के अनुयायी साधु-संत और देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु लगभग एक माह के लिए एकत्र होते हैं। साधु समाज मुख्यत: १० अखाड़ों में वर्गीकृत है। ये सब मिलकर सनातन हिन्दू संस्कृति के विभिन्न विषयों पर प्रबोधन एवं परस्पर विचार विमर्श करते हैं।

इस मेले की भव्यता और दिव्यता का वर्णन करना कठिन है। इस वर्ष जनवरी-फरवरी यानि माघ माह में कुंभ मेला तीर्थराज प्रयाग के गंगा, यमुना, सरस्वती नदियों के संगम पर आयोजित है।

अपने माता-पिता के साथ भारतीय सनातन संस्कृति का विराट दर्शन करने आप भी अवश्य जाएँ।

देवपुत्र का विशिष्ट बाल प्रतिभा अंक लोकार्पित

इन्दौर। दिनांक २९ नवम्बर २०२४ को स्थानीय लता मंगेशकर सभागृह में विद्या भारती मालवा प्रांत द्वारा आयोजित विद्वत परिषद् के भव्य मंच पर विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के महामंत्री और जाने माने शिक्षाविद् श्री. अवनीश भटनागर ने विद्याभारती मध्यक्षेत्र के अध्यक्ष श्री. विवेक जी शेंड्ये और विद्याभारती मालवा के संगठन मंत्री श्री. योगेश जी शर्मा के सारस्वत आतिथ्य में प्रसिद्ध उद्योगपति श्री. पवन जी सिंघानिया की अध्यक्षता में 'देवपुत्र' के विशिष्ट बाल प्रतिभा अंक का लोकार्पण किया। आपने 'परिवार : समाज का आधार' विषय पर प्रेरक व्याख्यान भी प्रदान किया।

'देवपुत्र' के संरक्षक मा. कृष्णकुमार जी अष्ठाना, सरस्वती बाल कल्याण न्यास के अध्यक्ष डॉ. कमल किशोर चितलांग्या, प्रबंध न्यासी सीए राकेश भावसार, देवपुत्र के संपादक श्री. गोपाल माहेश्वरी, प्रबंध संपादक श्री. नारायण चौहान ने लोकार्पण विधि सम्पन्न करवाई। अंक का परिचय प्रांत प्रमुख नगरीय शिक्षा विद्या भारती मालवा प्रांत श्री. पंकज पंवार ने करवाया।

कादम्बरी जबलपुर का भव्य सम्मान समारोह सम्पन्न

श्री. कृष्णकुमार अष्ठाना एवं श्री. भेरूलाल गर्ग 'वात्सल्य शिरोमणि'

९ नवम्बर २०२४। संस्कार धानी जबलपुर में राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त साहित्यिक संस्था 'कादम्बरी' ने देशभर के ११८ साहित्यकारों व पत्रकारों का भव्य सम्मान समारोह स्थानीय शहीद स्मारक भवन में आयोजित किया। श्री. कृष्णकुमार अष्ठाना (संरक्षक, देवपुत्र) एवं श्री. भेरूलाल गर्ग (संपादक बाल वाटिका) को **श्री. अश्वनीकुमार पाठक वात्सल्य शिरोमणि सम्मान** से अलंकृत किया गया। अस्वस्थतावश कार्यक्रम में प्रत्यक्ष उपस्थित न हो पाने पर यह सम्मान उनके निज निवास पर प्रदान किया गया।

आयोजक संस्था के प्रधान आचार्य भगवत् दुबे, डॉ. संतोष चौबे एवं स्वनाम धन्य वरिष्ठ साहित्यकार श्री. श्यामसुन्दर दुबे, साध्वी विभानंद गिरि की गरिमामय उपस्थिति से गौरवान्वित मंच पर 'देवपुत्र' के संपादक श्री. गोपाल माहेश्वरी को भी

स्व. मानकलाल शिवहरे बाल साहित्य सम्मान प्रदान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री. राजेश पाठक 'प्रवीण' ने किया।

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/१२/२०२४ | प्रेषण तिथि ३०/१२/२०२४ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

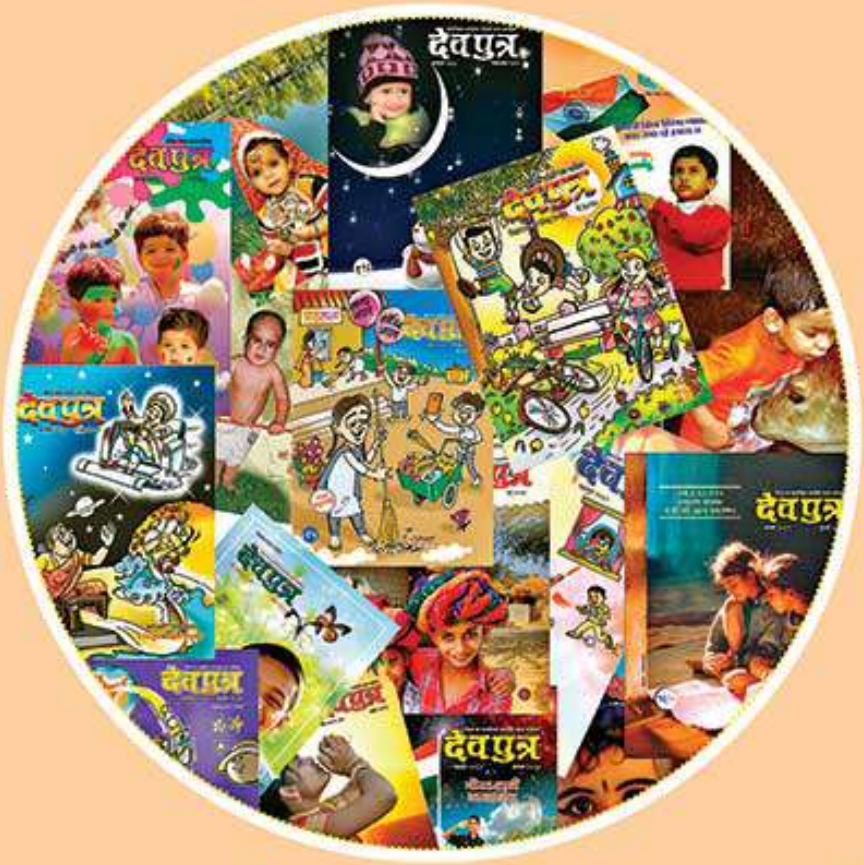

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी